E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

12th ANNIVERSARY

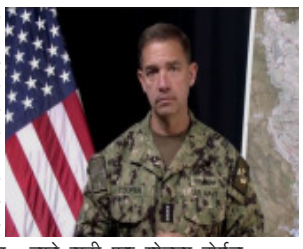

वर्ष -12 अंक - 52 | प्रयागराज, शुक्रवार 01 मई, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

'होर्मुज स्ट्रेट पर सेना, यूरेनियम पर कब्जा', ईरान के खिलाफ अमेरिकी आर्मी का नया प्लान तैयार

वॉशिंगटन। अमेरिका सेना ने कथित तौर पर ईरान पर नए सिरे से हमलों का प्लान तैयार किया है। सेना की ओर से यह प्लान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सामने रखा जाएगा। एक्सियोस ने बताया है कि डोनाल्ड ट्रंप को यूएस सेंट्रल कमांड (एंिऊण्ध्श) के हेड ब्रैड कूपर ईरान के खिलाफ संभावित सैन्य कार्रवाई की नई योजनाओं के बारे में ब्रीफ करेंगे। दावा किया गया है कि गुरुवार को आर्मी बताएगी कि वह किस तरह से ईरान में हमले करना चाहती है। इसके बाद डोनाल्ड ट्रंप इस पर आगे बढ़ने या नहीं बढ़ने का फैसला लेंगे। ट्रंप की सहमति मिलने पर अमेरिकी आर्मी नए सिरे से हमले शुरू कर सकती है। एक्सियोस ने अपनी रिपोर्ट में अज्ञात सूत्रों का हवाले से कहा है कि एंिऊण्ध्श ने ईरान पर 'छोटे लेकिन शक्तिशाले' हमलों की एक नई लहर के लिए योजना तैयार की है। इसमें खासतौर से ईरान के बुनियादी ढांचे के लक्ष्य बनाया जा सकता है। हालांकि वाइट हाउस या यूएस सेंट्रल कमांड की ओर से अभी तक इस पर कोई बयान नहीं आया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि डोनाल्ड ट्रंप के साथ साझा की

जाने वाली एक योजना होर्मुज जलडमरूमध्य के एक हिस्से पर कब्जा करने पर केंद्रित है। ऐसा करते हुए इस समुद्री गलियारे को वाणिज्यिक जहाजरानी के लिए फिर से खोला जा सकेगा। इस ऑपरेशन में अमेरिका की आर्मी (थल सेना) भी शामिल हो सकती है। रिपोर्ट के अनुसार, ब्रीफिंग में एक और विकल्प पर चर्चा होगी। यह ईरान के यूरेनियम के भंडार को कब्जे में लेने के लिए विशेष बलों के ऑपरेशन का प्लान है। विशेष कमांडो दस्ता ईरान से यूरेनियम लाने की कोशिश कर सकता है। ट्रंप और ब्रैड कूपर के अलावा जॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन जनरल डैन केन गुरुवार की ब्रीफिंग में शामिल हो सकते हैं। अमेरिका-इजरायल के हवाई हमलों के बाद 28 फरवरी को ईरान में युद्ध शुरू हुआ था। भीषण तबाही के बाद 8 अप्रैल को दोनों पक्षों में लड़ाई रुकी है सीजफायर के टूटने का खतरा लगातार मंडरा रहा है। ईरान और अमेरिका के बीच पाकिस्तान में समझौते के लिए हुई वार्ता असफल रहने के बाद दोनों पक्ष आक्रामक रुख अपनाए हुए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान से सीजफायर अनिश्तिकाल के लिए बढ़ा दिया है लेकिन वह लगातार धमकियां भी दे रहे हैं। ट्रंप कई बार कह चुके हैं कि उनके पास ईरान में तबाही मचाने का विकल्प है। ईरान भी कड़ा रुख अपनाए हुए है और जंग के लिए तैयार होने की बात कही है। ऐसे में फिर से युद्ध शुरू होने का खतरा बना हुआ है।

चीन ने नेपाल के लिए खोला खजाना, 11 अरब रुपये के अनुदान का किया वादा, बीआरआई में फंसाने की चाल?

काठमांडू। नेपाल में बालेन शाह की सरकार को लुभाने के लिए चीन अपना खजाना काठमांडू के लिए खोल रहा है। चीन ने काठमांडू रिंग रोड़ विस्तार परियोजना के दूसरे चरण के लिए 11 अरब नेपाली रुपये का अनुदान देने वादा किया है। बुधवार को नेपाल के भौतिक बुनियादी ढांचा, परिवहन और शहरी विकास मंत्रालय में इस संबंध में एक समझौता हुआ है। इस समझौते नेपाल के मंत्री सुनील लमसाल और नेपाल में चीन के राजदूत झांग माओमिंग ने हस्ताक्षर किए। समझौते के तहत, नेपाल के कलंकी से बसुंधरा तक के रिंग रोड हिस्से का विस्तार किया जाएगा। कोटेश्वर से कलंकी तक परियोजना का पहला चरण पहले ही पूरा हो चुका है। हस्ताक्षर समारोह के दौरान बालेन शाह की सरकार में मंत्री लमसाल ने कहा कि सरकार परियोजना का सुचारू रूप से क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगी। काठमांडू के लिए बीजिंग के अनुदान की घोषणा ऐसे समय में हुई है जब इसी मार्च में चीन ने अपनी 15वीं पंचवर्षीय योजना को अंतिम रूप दिया। वहीं, बीते मार्च

में ही नेपाल ने आम चुनाव में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी को एकल-बहुमत पार्टी के रूप में सरकार के लिए चुना है। चीन की पंचवर्षीय योजना में जहां कूटनीतिक कार्यसूची में पड़ोसी को सबसे पहले रखा है, वहीं नेपाल की नई सत्ताधारी पार्टी पड़ोसियों के साथ विकास की कूटनीति पर जोर देती है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का मुखपत्र कहे जाने वाले चाइना डेली के एक लेख में नेपाल को बीजिंग के लिए दक्षिण का प्रवेश द्वार बताया गया है। इसमें कहा गया है कि नेपाल तेजी से बढ़ते प्रमुख क्षेत्रीय बाजारों को जोड़ने वाले एक पुल के रूप में काम कर सकता है। नेपाल की बालेन शाह सरकार भी नेपाल को एक बफर स्टेट से क्षेत्रीय शक्तियों के बीच एक पुल के रूप में विकसित करने की बात कर चुकी है। चाइना डेली के लेख में चीन की बेल्ट और रोड पहल की तरफ नेपाल को लुभाने की कोशिश की गई है। यह खास तौर पर ऐसे समय में हो रहा है, जब बालेन शाह सरकार का चीन को लेकर सख्त रुख है। इसमें कहा गया है कि बीआरआई का बड़े प्रोजेक्ट्स से हटकर छोटे और स्मार्ट विकास प्रोजेक्ट्स पर जोर देना नेपाल के लिए खास है। इसके अनुसार, बीआरआई के तहत प्रोजेक्ट्स को गति देने से नेपाल की कनेक्टिविटी और आर्थिक स्थिति में कायापलट हो सकता है। इसमें अपील की गई है कि दोनों देशों के नेताओं को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए और संबंधों को व्यावहारिक लाभ में बदलना चाहिए।

सांसद ने पूछा- 'क्या ट्रम्प की दिमागी हालत ठीक है?', नाराज रक्षामंत्री बोले- बाइडेन से यह क्यों नहीं पूछा था

वॉशिंगटन। अमेरिका की हाउस आर्म्ड सर्विसेज कमेटी की सुनवाई

के दौरान एक बड़ा राजनीतिक विवाद सामने आया। डेमोक्रेट सांसद सारा जैकब्स ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की मानसिक स्थिति को लेकर सवाल पूछ लिया। जैकब्स ने अपने सवाल के दौरान ट्रम्प के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर किए गए हाल के पोस्ट का जिक्र किया और उनकी भाषा की आलोचना की। इसी दौरान उनके पीछे खड़े एक सहायक ने ट्रम्प के पुराने पोस्ट के कटआउट भी दिखाए। इनमें वह विवादित यीशु वाली एआई पोस्ट भी शामिल था, जिसे बाद में हटा दिया गया था। सारा जैकब्स ने सीधा सवाल करते हुए कहा, 'क्या आप मानते हैं कि राष्ट्रपति मानसिक रूप से इतने स्थिर हैं कि वे कमांडर-इन-चीफ की जिम्मेदारी निभा सकें?' इस पर पीट हेगसेथ नाराज हो गए। उन्होंने पलटकर पूछा, 'क्या आपने यही सवाल चार साल तक जो बाइडन से पूछा था?' हेगसेथ ने कहा कि इसी डेमोक्रेटिक पार्टी ने बाइडेन का तब बचाव किया था जब वे ठीक से बोल भी नहीं पा रहे थे। इस पर जैकब्स ने जवाब दिया कि 2024 के चुनाव में बाइडेन 'हमारे राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार नहीं थे।' हेगसेथ ने आगे कहा कि वह इस तरह के सवाल-जवाब में शामिल नहीं होना चाहते हैं।

हेलिकॉप्टर से पहली बार एक साथ 2 मिसाइल लॉन्च,जरूरत पड़ने पर हवा में टारगेट बदला भी जा सकता है-डीआरडीओ-नेवी का सफल परीक्षण

नयी दिल्ली। डीआरडीओ और नौसेना ने बुधवार को बंगाल की खाड़ी में हेलिकॉप्टर से शॉर्ट रेंज नेवल एंटी-शिप मिसाइल को सफल लॉन्च किया। इस दौरान एक हेलिकॉप्टर से कुछ ही सेकेंड के अंतर पर दो मिसाइलें दागी गईं। दोनों ने समुद्री जहाज के निचले हिस्से पर सटीक निशाना लगाया। इसके ?जरिए भारत ने साल्वो लॉन्च क्षमता को परखा। यानी एक लॉन्चर से कम

समय में ज्यादा मिसाइलें दागना। यह तकनीक दुश्मन के रडार सिस्टम को चकमा दे सकती है।ओडिशा के चांदीपुर की टेस्ट रेंज में लगे रडार, इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल सिस्टम और टेलीमेट्री के जरिए मिसाइल की पूरी उड़ान और निशाने को ट्रैक किया गया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि इस मिसाइल के बनने से सेना की ताकत काफी बढ़ेगी। मिसाइल ने समुद्री जहाज के उस हिस्से को निशाना बनाया, जहां हमला होने पर ज्यादा नुकसान होता है। मिसाइल में शुरुआत के लिए बूस्टर और आगे उड़ान बनाए रखने के लिए अलग सिस्टम लगा है। साथ ही टारगेट पहचानने, रास्ता तय करने और ऊंचाई बनाए रखने के लिए कई तकनीकें जोड़ी गई हैं। मिसाइल में ऐसा सिस्टम है, जिससे उड़ते वक्त भी उसे नई जानकारी दी जा सकती है। जरूरत पड़ने पर दिशा बदली जा सकती है। इस मिसाइल को डीआरडीओ की अलग-अलग लैब्स और भारतीय उद्योगों ने मिलकर तैयार किया है। अब इसका उत्पादन भी देश में ही किया जा रहा है। युद्धपोत प्रोजेक्ट के लिए भी टेस्ट पूरे-इससे पहले शनिवार को डीआरडीओ और नौसेना ने एक नए युद्धपोत प्रोजेक्ट के लिए हाइड्रोडायनामिक परफॉर्मेंस और मॉडल टेस्टिंग पूरी की। यह काम नेवल साइंस एंड टेक्नोलॉजिकल लैबोरेटरी और नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो ने मिलकर किया। टेस्ट में जहाज की रफ्तार, पानी में उसका व्यवहार, इंजन से मिलने वाली ताकत और मोड़ने की क्षमता जैसे अहम पहलुओं को परखा गया। नतीजे अंतरराष्ट्रीय स्तर के बराबर पाए गए। डीआरडीओ के अध्यक्ष समीर वी कामत ने इस प्रोजेक्ट के नतीजे नौसेना के अधिकारी संजय साधु को सौंपे। इस दौरान डीआरडीओ और नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। महाराष्ट्र के अहिल्यानगर में डीआरडीओ ने नए आर्मर्ड प्लेटफॉर्म पेश किए। ये ट्रैक और पहियों के दोनों तरह के हैं। इन्हें सेना की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इन प्लेटफॉर्म में 30 मिमी का क्रूलेस टर्रेट लगाया गया है। इसमें ताकतवर इंजन और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे इसकी स्पीड और क्षमता बढ़ती है। साथ ही इसमें चारों तरफ सुरक्षा कवच दिया गया है। ये प्लेटफॉर्म जमीन के साथ पानी में भी चल सकते हैं। इनमें हाइड्रो जेट तकनीक दी गई है, जिससे पानी में चलना आसान होता है। ये एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल दागने में भी सक्षम हैं। इन प्लेटफॉर्म में अभी करीब 65फीसदी स्वदेशी सामान का इस्तेमाल हुआ है, जिसे आगे बढ़ाकर 90फीसदी तक ले जाने की योजना है।

ट्रम्प ने अपनी फोटो शेयर कर लिखा-तूफान आने वाला है

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने आज सोशल मीडिया पर एक तस्वीर शेयर की है। इसे ईरान को धमकी माना जा रहा है। इस तस्वीर पर लिखा है कि तूफान आने वाला है। और जो आने वाला है उसे कोई रोक नहीं सकता। वहीं, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने कहा कि अमेरिका की समुद्री नाकाबंदी कामयाब नहीं होगी।

ईरानी बंदरगाहों को रोकने की कोई भी कोशिश आखिर में फेल ही होगी। उन्होंने 'नेशनल पर्शियन गल्फ डे' के मौके पर कहा कि इस तरह की नाकाबंदी अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ है और इससे दुनिया की शांति पर भी असर पड़ता है।

कच्चा तेल चार साल में सबसे महंगा,जंग के बीच कीमत डॉलर126 प्रति बैरल पहुंची, ईरान का तंज- अगला पड़ाव 140 डॉलर

तेहरान। मिडिल ईस्ट में जंग के बीच कच्चे तेल की कीमत 126 डॉलर प्रति बैरल के पार कर गई है। ताजा आंकड़ों के मुताबिक ब्रेंट क्रूड की कीमत लगभग 126.31 डॉलर प्रति बैरल तक चली गई, जो मार्च 2022 के बाद का सबसे ऊंचा स्तर है। फिलहाल यह 125 डॉलर प्रति बैरल के आस-पास ट्रेंड कर रहा है।बीबीसी के मुताबिक अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को आज ईरान के खिलाफ हमले से जुड़ी ब्रीफिंग दी जाएगी। इसमें ईरान पर हमले से जुड़ी

नई प्लानिंग पर बात हो सकती है। इस खबर के बाहर आने के बाद तेल की कीमतें बढ़ी हैं। वहीं, तेल की कीमतें बढ़ने को लेकर ईरानी संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने तंज कसते हुए कहा कि अगला पड़ाव 140 डॉलर होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि ट्रम्प को उनके लोग बेकार सलाह दे रहे हैं। उन्होंने अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट का भी मजाक उड़ाया और कहा कि उनकी सलाह की वजह से तेल की कीमतों में इजाफा हो रहा है। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स- 1. जंग में अमेरिका के डॉलर25 अरब खर्चः अमेरिका ईरान युद्ध पर पिछले 2 महीने में अब तक 25 अरब डॉलर खर्च कर चुका है। अमेरिका ने पहली बार जंग में हुए खर्च की जानकारी दी है। 2. ट्रम्प ने राइफल के साथ फोटो शेयर कीः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने राइफल के साथ फोटो पोस्ट कर ईरान को चेतावनी दी। फोटो पर लिखा था- नो मोर मिस्टर नाइस गाइ (मैं नरमी नहीं बरतूंगा)। 3. ईरान ने यूएन में अमेरिका की शिकायत कीः ईरान ने संयुक्त राष्ट्र में शिकायत कर अमेरिका पर जहाज जब्त करने और 38 लाख बैरल तेल कब्जाने का आरोप लगाया। 4. लेबनान में 12 लाख लोगों पर भुखमरी का खतराः यूएन से जुड़ी रिपोर्ट में कहा गया कि युद्ध, विस्थापन और आर्थिक दबाव के कारण लेबनान में 12 लाख से ज्यादा लोग खाद्य संकट झेल सकते हैं। 5. भारत-ईरान विदेश मंत्रियों की फोन पर बातचीतः विदेश मंत्री एस. जयशंकर और ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने युद्धविराम, द्विपक्षीय रिश्तों और क्षेत्रीय हालात पर फोन पर चर्चा की।

रुपया रिकॉर्ड ऑल टाइम लो पर आया,1 डॉलर की कीमत 95.20 रुपए हुई, इससे महंगाई बढ़ने का खतरा

नयी दिल्ली। भारतीय रुपया आज यानी 30 अप्रैल को डॉलर के मुकाबले 95.20 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गया है। प्लास्टिक और अन्य पेट्रोकेमिकल प्रोडक्ट्स की सप्लाई प्रभावित। महंगाई का डरः डॉलर महंगा होने से पेट्रोल-डीजल और इम्पोर्टेड

मिडिल ईस्ट युद्ध और एनर्जी सप्लाई रुकावटों से यह गिरावट आई। विदेशी ब्रोकरेज फर्म बर्नस्टीन के मुताबिक, ईरान युद्ध जारी रहा तो रुपया 98 तक जा सकता है। विदेशी निवेशकों (एफपीआई) की लगातार बिकवाली और वैश्विक स्तर पर बढ़ते व्यापारिक तनाव की वजह से रुपए में यह गिरावट देखी जा रही है। साल 2026 की शुरुआत से ही रुपया दबाव में है। पिछले साल दिसंबर 2025 में पहली बार रुपया 90 के स्तर के पार गया था। मिडिल ईस्ट संघर्ष को दशकों का सबसे गंभीर एनर्जी संकट माना जा रहा है, जिसका सीधा असर भारत पर पड़ रहा है। तेल की कीमतेंः कच्चे तेल महंगे होने से भारत का इम्पोर्ट बिल बढ़ा। जरूरी सामान महंगाः एलपीजी, सामान महंगे होंगे, जिससे रिटेल महंगाई बढ़ सकती है। विदेश में पढ़ाई-घूमना महंगाः विदेश जाने या पढ़ाई के लिए डॉलर खरीदने पर अब ज्यादा रुपए खर्च करने होंगे।इलेक्ट्रॉनिक्स महंगेः मोबाइल, लैपटॉप और आयातित पार्ट्स महंगे हो सकते हैं, क्योंकि भुगतान डॉलर में होता है। डॉलर के मुकाबले किसी करेंसी की वैल्यू घटे तो उसे मुद्रा का गिरना या कमजोरी (करेंसी डेप्रिसिएशन) कहते हैं। हर देश के पास फॉरेन करेंसी रिजर्व होता है, जिससे इंटरनेशनल ट्रांजैक्शन होते हैं। इसके घटने-बढ़ने का असर करेंसी पर पड़ता है। अगर भारत के फॉरेन रिजर्व में डॉलर पर्याप्त होंगे तो रुपया स्थिर रहेगा। डॉलर घटे तो रुपया कमजोर, बढ़े तो मजबूत होगा।

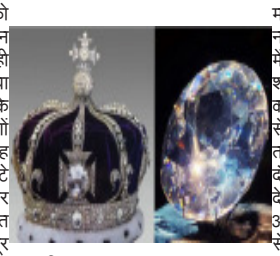

ब्रिटिश किंग से मिले न्यूयॉर्क मेयर ममदानी,मुलाकात से पहले कहा था- कोहिनूर भारत को लौटाने बोलूंगा

न्यूयॉर्क। ब्रिटिश किंग चार्ल्स और क्वीन कैमिला ने बुधवार को न्यूयॉर्क शहर के मेयर जोहरान ममदानी से मुलाकात की। यह शाही जोड़ा 9/11 मेमोरियल पहुंचा था जहां उन्होंने 11 सितंबर 2001 के आतंकी हमलों में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी। खास बात यह है कि इस मुलाकात से कुछ घंटे पहले ममदानी ने कहा था कि अगर उन्हें किंग चार्ल्स से अलग से बात करने का मौका मिला, तो वे कोहिनूर हीरा भारत को लौटाने की बात उठाएंगे। हालांकि यह साफ नहीं हो पाया है कि इस छोटी बातचीत के दौरान ममदानी ने यह मुद्दा उठाया या नहीं। उनके ऑफिस से भी इस पर तुरंत कोई जवाब नहीं मिला। कोहिनूर वही हीरा है जो ब्रिटेन के शाही ताज में जड़ा है और टावर ऑफ लंदन में रखा गया है। यह 177 साल से ब्रिटेन के पास है। भारत ने ब्रिटेन के सामने कई बार कोहिनूर हीरे पर अपना कानूनी हक होने का दावा किया है। कोहिनूर हीरा 1849 से ब्रिटेन के पास है। द्वितीय एंग्लो-सिख युद्ध में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से सिख साम्राज्य के हारने के बाद अंग्रेजों ने पूरे पंजाब पर कब्जा कर लिया। उस समय सिख साम्राज्य के शासक दलीप सिंह थे, जिनकी उम्र सिर्फ 10 साल थी। युद्ध हारने के बाद अंग्रेजों ने उनसे लाहौर की

संधि पर हस्ताक्षर करवाए। इस संधि की शर्तें बहुत सख्त थीं। इसके तहत पंजाब को ब्रिटिश शासन के अधीन कर दिया गया और साथ ही कोहिनूर हीरा भी अंग्रेजों को सौंपना पड़ा। इसके बाद यह हीरा ब्रिटेन पहुंचा और क्वीन विक्टोरिया को दे दिया गया। कोहिनूर हीरे का इतिहास विवादों से भरा रहा है। कहा जाता है कि साल 1526 में हुमायूं ने आगरा किला पर हमला किया था। इसे जीतने पर बड़े पैमाने में खजाने के साथ-साथ विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी मिला था। बाबरनामा के मुताबिक, कोहिनूर हीरा इतना कीमती था कि इससे पूरी दुनिया को ढाई दिन का भोजन करवाया जा सकता था। 1739 में ईरानी शासक नादिर शाह ने आक्रमण किया। उसने आगरा और दिल्ली में लूटपाट की। वह कोहिनूर और मयूर सिंहासन को भी साथ ले गया। नादिर शाह की हत्या के बाद 1747 में यह हीरा अफगानिस्तान के अहमद शाह के पास पहुंचा। इसके बाद कोहिनूर हीरा शाह शुजा के हाथों से होते हुए महाराजा रणजीत सिंह तक पहुंचा। औरंगजेब के शासन के दौरान उसने यह हीरा शाहजहां की देख-रेख में रखा था। शाहजहां आगरा किले में कैद होकर इसी हीरे से ताजमहल को देखते थे। साल 1849 में जब अंग्रेजों ने पंजाब पर कब्जा किया तो इस हीरे को ब्रिटेन की तब की महारानी विक्टोरिया को सौंप दिया गया। बाद में इसे और कई हीरों के साथ ब्रिटेन के शाही ताज में लगा दिया गया। महारानी एलिजाबेथ की मौत के बाद से कई बार कोहिनूर को वापस भारत लाने की मांग उठ चुकी है। भारत कई बार कोहिनूर वापस मांग चुका है- कोहिनूर जड़े ताज को सबसे पहले ब्रिटेन की क्वीन मदर ने पहना था। इसके बाद ये ताज क्वीन एलिजाबेथ को मिला था। इस ताज में कोहिनूर के अलावा अफ्रीका का बेशकीमती हीरा ग्रेट स्टार ऑफ अफ्रीका सहित कई कीमती पत्थर जड़े हैं। इसकी कीमत करीब 40 करोड़ डॉलर आंकी गई है। भारत ने ब्रिटेन के सामने कई बार कोहिनूर हीरे पर अपना कानूनी हक होने का दावा किया है।

मई में 12 दिन बंद रहेंगे बैंक, सिगरेट 17फीसदी तक महंगी हो सकती है

नयी दिल्ली। देश में आज से सिगरेट पीना महंगा हो सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, प्रमुख

सिगरेट कंपनियां आईटीसी और गॉडफ्रे फिलिप्स मई में कीमतों में 17फीसदी तक की बढ़ोतरी कर सकती हैं। वहीं, 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 809 रुपए घटकर 1,47,973 रुपए पर आ गया है। इससे पहले मंगलवार को इसकी कीमत 1,48,782 रुपए प्रति 10 ग्राम थी। एक किलो चांदी 241 रुपए गिरकर 2,36,300 रुपए पर पहुंच गई है।देश में अगले महीने से सिगरेट पीना महंगा हो सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, प्रमुख सिगरेट कंपनियां आईटीसी और गॉडफ्रे फिलिप्स मई में कीमतों में 17फीसदी तक की बढ़ोतरी कर सकती हैं। अगले महीने यानी मई में देश के अलग-अलग राज्यों में कुल 12 दिन बैंकों में कामकाज नहीं होगा। आरबीआई की ओर से जारी कैलेंडर के अनुसार, अगले महीने 5 रविवार और दूसरे-चौथे शनिवार के अलावा 5 दिन अलग-अलग जगहों पर बैंक बंद रहेंगे। महीने की शुरुआत छुट्टी से होगी। 1 मई को महाराष्ट्र दिवस, बुद्ध पूर्णिमा और मजदूर दिवस (लेबर डे) पर देश में लगभग सभी जगह बैंक बंद रहेंगे।

पेट्रोल रु14 नुकसान में बेच रहीं तेल कंपनियां,डीजल पर रु18 का घाटा, कच्चा तेल महंगा होने से रसोई गैस पर भी रु80,000 करोड़ का बोझ

नयी दिल्ली। इंटरनेशनल मार्केट में कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के बावजूद रिटेल रेट न बढ़ने से कंपनियों को हर एक लीटर पेट्रोल और डीजल पर घाटा हो रहा है। रेटिंग एजेंसी इक्रा के मुताबिक, तेल कंपनियां पेट्रोल पर रु14 और डीजल पर रु18 प्रति लीटर का नुकसान झेल रही हैं। मिडिल ईस्ट में जारी तनाव के कारण सप्लाई चैन प्रभावित हुई है, जिससे कच्चे तेल के दाम तेजी से बढ़े हैं। इससे तेल कंपनियों पर बोझ बढ़ रहा है। यही नहीं रसोई गैस के लिए भी सरकार पर रु80,000 करोड़ का बोझ बढ़ रहा है। मिडिल ईस्ट में चल रहे तनाव फिर बढ़ने से कच्चे तेल की सप्लाई चेन चरमरा गई है। जो कच्चा तेल कुछ समय पहले 70-72 डॉलर प्रति बैरल मिल रहा था, उसकी कीमत अब 120-125 डॉलर के पार पहुंच गई है। तेल कंपनियों के लिए मुसीबत यह है कि वे महंगा तेल खरीदकर पुरानी कीमतों पर ही बेच रही हैं, जिससे उनका मुनाफा खत्म हो गया है। दुनिया का लगभग 20फीसदी तेल और गैस का व्यापार 'स्ट्रैट ऑफ होर्मुज' के समुद्री रास्ते से होता है। मिडिल ईस्ट संकट की वजह से इस रास्ते में बाधा आ रही है। इससे केवल पेट्रोल-डीजल ही नहीं, बल्कि खाद और केमिकल बनाने वाली कंपनियों की लागत भी बढ़ गई है। रसोई गैस और खाद भी महंगी हुई। इस संकट का असर आपकी रसोई और खेतों तक भी पहुंच रहा हैः-रसोई गैस (एलपीजी) : कंपनियों को लागत से कम दाम पर सिलेंडर बेचने पड़ रहे हैं। अनुमान है कि इस साल कंपनियों को रु80,000 करोड़ का घाटा (अंडर-रिकवरी) हो सकता है। खाद : खेती के लिए जरूरी यूरिया बनाने की लागत बढ़ गई है। सरकार ने खाद सब्सिडी के लिए रु1.71 लाख करोड़ का बजट रखा था, लेकिन अब यह खर्च बढ़कर रु2.25 लाख करोड़ तक पहुंच सकता है। सरल भाषा में कहें तो जब कंपनियों को कोई चीज बनाने या खरीदने में रु100 खर्च करने पड़ते हैं, लेकिन सरकार या बाजार के दबाव में उसे रु80 में ही बेचना पड़ता है, तो बचे हुए रु20 के नुकसान को 'अंडर-रिकवरी' कहते हैं। पेट्रोल, डीजल और गैस के मामले में अभी यही हो रहा है। सीएनजी और उद्योगों पर भी बुरा साया-शहरों में गाड़ियों में इस्तेमाल होने वाली सीएनजी के मार्जिन में भी कमी आने की आशंका है, क्योंकि कंपनियां बढ़ी हुई लागत का पूरा बोझ ग्राहकों पर नहीं डाल पा रही हैं। इक्रा ने केमिकल, प्लास्टिक और खाद सेक्टर का भविष्य 'नेगेटिव' बताया है।

डीएम की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न,सुरक्षित व सुगम यातायात के लिए दिए गए आवश्यक दिशा-निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जनपद में सड़क सुरक्षा को सुदृढ़ करने तथा यातायात व्यवस्था को अधिक सुरक्षित एवं सुगम बनाने के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई। बैठक के दौरान राजमार्गों पर अवैध रूप से बनाए गए कटों को बंद कराने, राष्ट्रीय राजमार्गों पर नियमित एवं प्रभावी पेट्रोलिंग सुनिश्चित करने, पार्किंग व्यवस्था को व्यवस्थित करने तथा सड़क सुरक्षा से संबंधित प्रवर्तन कार्यवाहियों को और अधिक सख्ती से लागू करने के निर्देश दिए गए। इसके अतिरिक्त, इंटीग्रेटेड रोड एक्सीडेंट डेटाबेस में विभिन्न विभागों द्वारा समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने पिछली बैठक में दिए गए निर्देशों के अनुपालन की जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर पेट्रोलिंग व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि गंगा एक्सप्रेसवे पर यातायात प्रारंभ हो चुका है, अतः वहां भी सघन पेट्रोलिंग की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। एक्सप्रेसवे पर किसी भी प्रकार की स्टंटबाजी अथवा अराजक गतिविधियां न हो यह सुनिश्चित कराया जाए। उन्होंने कहा कि गुड समेरिटन योजना के प्रोत्साहन हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वि0रा0) अमृता सिंह, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता महिपाल सिंह, एआरटीओ प्रवर्तन उमेश चंद कटियार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

किसानों की प्रगति एवं समस्याओं के निदान हेतु ग्रामिक केन्द्र का उदघाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। किसानों की समस्याओं के निदान और प्रगति के लिए दीन शाह गौरा में ग्रामिक केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर ग्रामिक केंद्र के प्रबंधक प्रज्ञेश वर्धन सिंह ने कहा कि किसान अन्नदाता है। उसकी उन्नति से ही देश की उन्नति संभव है। रायबरेली जनपद के दीन शाह गौरा बाजार में किसानों की आर्थिक समृद्धि के लिए ग्रामिक केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस केंद्र का उद्घाटन गौरा स्टेट की महारानी श्रीमती ऊषा सिंह और इंटर कॉलेज गौरा के प्रबंधक व गौरा स्टेट के राजा प्रत्यूष वर्धन सिंह (पप्पू राजा) ने किया। इन्होंने कहा कि इसके माध्यम से किसानों की सभी प्रकार की समस्याओं का निदान किया जाएगा। इस ग्रामिक केंद्र के मुख्य प्रबंधक कुंवर प्रज्ञेश वर्धन सिंह ने कहा कि यह केंद्र बहुउद्देशीय केंद्र है। यहां से पालतू और दुधारू पशुओं के लिए पशु आहार के साथ-साथ उन्नतशील बीज, कीटनाशक, फफूंद नाशक, शाक नाशक और आधुनिक कृषि उपकरण की व्यवस्था की जाएगी। आगे उन्होंने कहा कि ग्रामिक केंद्र के माध्यम से लोगों को पशुपालन की विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी। इसके माध्यम से मृदा परीक्षण और कृषि उपज की खरीद भी की जाएगी। आगे जानकारी देते हुए प्रज्ञेश वर्धन सिंह ने कहा कि ग्रामिक केंद्र किसानों को प्रगति के केंद्र में रखकर ग्रामीण कृषि परिदृश्य को बदलने में एक सार्थक भूमिका निभायेगा। ग्रामिक केंद्र टेक्नोलॉजी, उचित बाज़ार और आर्थिक सहायता तक पहुँच उपलब्ध कराने के प्रयास से किसानों को अपनी आजीविका के मामले में अधिक आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनने में मददगार साबित होगा। ग्रामिक के साथ जुड़कर मुझे इस सफ़र का हिस्सा होने पर गर्व महसूस हो रहा है। मैं किसानों की मदद न केवल उनकी फ़सलों में कर रहा हूँ, बल्कि उनके पशुधन के पालन-पोषण में उनका साथ दे रहा हूँ, जो उनके रोज़मर्रा के जीवन का एक बेहद ज़रूरी हिस्सा है। यह मुझे सीधे और सार्थक तरीके से योगदान देने का अवसर देता है, जिससे मैं उनके रोज़मर्रा के जीवन और उनकी भलाई का एक छोटा, लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा बन पा रहा हूँ। यह केवल व्यापार के बारे में नहीं है, बल्कि यह विश्वास बनाने, समुदायों को सशक्त बनाने और उन लोगों के साथ मिलकर आगे बढ़ने के बारे में है, जो हमारे राष्ट्र की रीढ़ हैं। उद्घाटन समारोह में इंटर कॉलेज गौरा के प्रधानाचार्य चीफ ऑफिसर लाल संजय प्रताप सिंह, उप प्रधानाचार्य डॉ सुनील दत्त, पूर्व प्रधानाचार्य मेजर हरिश्चंद्र सिंह, लेफ्टिनेंट राजेंद्र प्रताप सिंह, अंबारा मथई के प्रधान धर्मेंद्र सिंह, पूर्व प्रधान जगदेव यादव, पूर्व प्रधान कपेन्द्र बहादुर सिंह, पूर्व प्रधान भोथे सिंह, डॉ राजेश सिंह, शिक्षामित्र संघ के जिला अध्यक्ष अजीत सिंह, करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष दुर्गेश सिंह (दीपू), कमल पांडेय, शिव प्रताप सिंह (मुनीम जी) समेत गौरा क्षेत्र के तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मंत्री नन्दी और पूर्व महापौर ने किया होटल ताज का भूमि पूजन

मम्फोर्डगंज में जल्द शुरू होगा 22 मंजिला फाइव स्टार होटल ताज का निर्माण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। धर्म, आस्था एवं अध्यात्म के केंद्र संगम नगरी प्रयागराज में जल्द ही आधुनिक सुविधाओं से संपन्न बहुमंजिले पांच सितारा होटल ताज का निर्माण होगा। जिसका निर्माण इकावो हॉस्पिटैलिटी द्वारा कराया जा रहा है। निर्माण कार्य शुरू करने के पूर्व बुधवार को मंफोर्डगंज में भव्य भूमि पूजन का आयोजन किया गया। जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी एवं प्रयागराज की पूर्व महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नन्दी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर आयोजित अखंड रामायण एवं हवन पूजन में सम्मिलित हुए। इकावो हॉस्पिटैलिटी के डायरेक्टर अभिषेक गुप्ता एवं प्रयागराज की पूर्व महापौर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नन्दी ने भूमि पूजन किया। ममफोर्डगंज में कलश चौराहा के पास इकावो हॉस्पिटैलिटी द्वारा 12000 स्क्वायर मीटर में 22 मंजिले होटल ताज का निर्माण कराया जाएगा। जिसमें शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के साथ ही सिनेप्लेक्स का भी निर्माण होगा। होटल से पूरे शहर का नजारा दिखाई देगा। होटल निर्माण के लिए तीन साल का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मोडा आर्क इंडिया आर्किटेक्ट जीतेन्द्र जैन द्वारा निर्माण कराया जाएगा। मम्फोर्डगंज में स्थापित होने वाला होटल ताज कनेक्टिविटी के मामले में भी प्रयागराज आने वाले यात्रियों के लिए काफी बेहतर साबित होगा। 20 मिनट में एयरपोर्ट पहुंच सकेंगे। लखनऊ, कानपुर, वाराणसी से आने वाले यात्री भी दो से तीन घंटे में जा सकेंगे। भूमि पूजन के पूर्व मम्फोर्डगंज में अखंड रामायण का आयोजन किया गया। जिसका बुधवार को समापन हुआ। इस दौरान जिलाधिकारी प्रयागराज मनीष वर्मा, राणा चावला, संतोष गुप्ता, पार्षद विश्वास रावत, साहिल अरोरा, अवंतिका टंडन, अजय केशरी मंडल अध्यक्ष सुमित वैश्य, परमानंद वर्मा, रजत दुबे, कबीर जायसवाल, गया प्रसाद निषाद आदि मौजूद रहे।

इकावो हॉस्पिटैलिटी द्वारा कराया जा रहा है होटल ताज का निर्माण

जिला स्तरीय व्यापार बंधु की बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय व्यापार बन्धु की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने व्यापार बंधु द्वारा सड़कों की मरम्मत एवं नालियों की साफ-सफाई, जल निकासी, सफाई, जाम, अतिक्रमण, विद्युत कार्य को दुरुस्त कराने आदि के संज्ञान में लाए गए कार्यों की बिंदुवार समीक्षा की। जिलाधिकारी ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में साफ सफाई, पार्किंग, सामुदायिक शौचालय की समस्या आदि जैसी समस्याओं के सम्बन्ध में जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त समस्याओं का प्राथमिकता के साथ समयबद्ध गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराए, जो बड़े कार्य है, उनके लिए प्रयास कर निस्तारण कराने का प्रयास किया जाए। जिससे व्यापारियों को किसी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न न हो। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि नगर पालिका क्षेत्र में कही पर अवैध स्टैण्ड संचालित न हो, अधिकृत स्टैण्डों पर निर्धारित शुल्क ही लिया जाये, निर्धारित शुल्क की रेट लिस्ट प्रत्येक स्टैण्ड पर डिस्प्ले की जाये, यदि कही पर भी अवैध वसूली या अवैध स्टैण्ड संचालित होने की शिकायत प्राप्त होती है तो उसकी जांच कराकर सम्बन्धित के विरूद्ध एफआईआर दर्ज करायी जाये व फर्म को ब्लैक लिस्ट किया जायें। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, उपायुक्त राज्यकर परमहंस लाल श्रीवास्तव, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी अरविन्द कुमार, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका स्वर्ण सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी व व्यापारीगण उपस्थित रहे।

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICI

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of India)

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

डॉ.अम्बेडकर जयन्ती माह पर बच्चों को स्कूली ड्रेस वितरित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश की उप शाखा ग्राम कपास खिरिया द्वारा स्थानीय अम्बेडकर बुद्ध विहार के प्रांगण में भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती माह के अंतर्गत जयंती समारोह बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. अम्बेडकर बुद्ध विहार के संस्थापक एवं शाखा कपास खिरिया के अध्यक्ष मालिखान सिंह दिनकर एडवोकेट ने प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को निशुल्क ड्रेस वितरित की । इसी का साथ उन्होंने बच्चों से मन लगाकर पढ़ाई करने का आग्रह भी किया। ड्रेस पाकर बच्चों एवं उनके के अभिभावक गण ने अति प्रसन्न होकर इस कार्य की बड़ी सराहना की। अपने वक्तव्य में सभा को संबोधित करते हुए भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय संयुक्तमंत्री महेन्द्र सिंह दिनकर ने कहा की बाबा साहब डॉ.अम्बेडकर सामाजिक गुलामी एवं अपमान को सहते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त शिखर तक पहुँचे। उन्हें दुनियाँ के लोग ज्ञान के प्रतीक के रूप में जानती है । उन्होंने हजारों वर्षों से जकड़ी हुई मानवता विरोधी सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर व संविधान पर बनाकर दासता से मुक्त किया।एम.एल. मित्रा ने अपने नाट्य कला मंडल के माध्यम से समाज में अंधविश्वास को त्याग करके बाबा साहब के बताए हुए रास्ते पर चलने का आवाहन किया । इस अवसर पर आर.बी.एम. इण्टर कॉलेज के प्रवक्ता राजकुमार सिंह, पृथ्वीराज, अमर सिंह दिनकर ,डॉ. पवन सिंह दिनकर, मुनेन्द्र सिंह दिनकर, रामसेवक बौद्ध, रामनिवास बौद्ध, राम औतार ,हरीराम बौद्ध,सुरेश चंद्र ,प्रमेश गौतम, शक्तिमान, धर्मपाल, सर्वेश, सविता, रीता, मैत्री,श्याम सिंह ,दिव्यांश सिंह, प्रियांशु, शीलांकर बौद्ध, आदि की गरिमामयी उपस्थिति बनी रहा । क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने इस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। अन्त में शाखा अध्यक्ष एड. मलिखान सिंह दिनकर ने उपस्थित जनसमुदाय का आभार ज्ञापित कियाऔर लोकमंगल कामनाओं के साथ समारोह सम्पन्न हो गया।

हिन्दू समाज में समाप्त हो भेदभावः नरेन्द्र ठाकुर जी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। हिन्दू समाज में जाति, भाषा, प्रान्त आदि के आधार पर भेदभाव समाप्त होना चाहिये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व्यक्ति निर्माण से राष्ट्रनिर्माण के कार्य में लगा है। इसके लिए 32 से अधिक संगठन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। ये बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर जी ने गुरुवार को नारद जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित मीडिया संवाद कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने कहा कि आरएसएस की 100 वर्ष की यात्रा सामान्य यात्रा नहीं है। हमारे कार्यकर्ताओं ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। संघ विश्व में भारत माता की जय जयकार के लिये कार्य करता है। भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाना संघ का उद्देश्य है। प्रथम सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार जी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि संघ व्यक्तिनिष्ठ नहीं, तत्वनिष्ठ बनने में विश्वास करता है। इसीलिये हमने किसी व्यक्ति को नहीं बल्कि परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु माना। उन्होंने कहा कि संघ की 85000 से अधिक दैनिक शाखाएँ और 32000 से अधिक साप्ताहिक मिलन चल रहे हैं। वनवासी क्षेत्रों से लेकर नगरों तक अनगिनत सामाजिक कार्य स्वयंसेवक चला रहे हैं। नरेन्द्र ठाकुर जी ने संघ के भविष्य की कार्य योजना पर चर्चा करते हुए कहा कि पंच परिवर्तन का कार्य समाज में चल रहा है। सामाजिक समरसता के माध्यम से हम हिन्दू समाज के बीच हर प्रकार का भेदभाव मिटाना चाहते हैं। शताब्दी वर्ष में हिन्दू सम्मेलनों में समाज के सभी वर्ग एक साथ आये और सहयोग किया। कुटुम्ब प्रबोधन के जरिये संघ चाहता है कि पारिवारिक व्यवस्था ठीक रहे तो समाज भी ठीक रहेगा। पर्यावरण संरक्षण भी समाज का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिये। साथ ही स्व के आधार पर समाज का जीवन चलना चाहिये। भाषा, वेशभूषा में भी स्व का प्रभाव होना चाहिये। इसी प्रकार सभी को नागरिक कर्तव्यों का बोध होना चाहिये। हर व्यक्ति देश, समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझे। यूजीसी दिशा निर्देशों को लेकर किये गये एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि यह मामला सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन है। इसलिए संघ इस विषय पर अपना कोई मत व्यक्त नहीं करना चाहता, फिर भी हमारा मानना है कि समाज में सद्भाव बना रहना चाहिए। हमें आपस में नहीं उलझना है। कार्यक्रम में अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य कृपाशंकर, पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र प्रचार प्रमुख सुभाष, सह क्षेत्र प्रचार प्रमुख एवं राष्ट्रधर्म के निदेशक मनोजकांत, प्रान्त प्रचारक कौशल, प्रान्त संघचालक सरदार स्वर्ण सिंह, विश्व संवाद केन्द्र के प्रमुख डॉ. उमेश, विश्व संवाद केन्द्र न्यास के उपाध्यक्ष अशोक सिन्हा, प्रान्त के विशेष सम्पर्क प्रमुख प्रशान्त भाटिया सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ पत्रकार एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित न होने पर भाजपा महिला मोर्चा का आक्रोश, फूंका राहुल-अखिलेश का पुतला

कचहरी तिराहे पर किया प्रदर्शन, जिलाध्यक्ष पुष्पा सिंह बोलीं- विपक्ष के कारण रुका बिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। नारी शक्ति वंदन अधिनियम संसद में पारित न होने से भाजपा कार्यकर्ताओं में आक्रोश है।

गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा अध्यक्ष पुष्पा सिंह की अध्यक्षता में महिला कार्यकर्ताओं ने नगर में जुलूस निकालकर विरोध प्रदर्शन किया।

भाजपा महिला कार्यकर्ताओं ने 'मातृ शक्ति जिंदाबाद', 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम, 'भारतीय जनता पार्टी जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए सिविल लाइन रोड कचहरी तिराहे पर राहुल गांधी और अखिलेश यादव सहित अन्य नेताओं का पुतला दहन किया।

कार्यक्रम की संयोजक महिला जिलाध्यक्ष पुष्पा सिंह ने कहा कि यह आक्रोश केवल रॉबर्ट्सगंज नगर में नहीं बल्कि पूरे देश में व्याप्त है।

उत्तर प्रदेश के कई जिलों में 'जन आक्रोश महिला सम्मेलन' आयोजित किए गए हैं, जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष के कारण ही महिला आरक्षण से जुड़ा बिल पास नहीं हो सका।

रावटसगंज नगर मंडल अध्यक्ष विनय श्रीवास्तव ने सरकार से मांग की कि जल्द से जल्द यह बिल पास किया जाए ताकि मातृ शक्ति को समाज में उनका अधिकार मिल सके।

इस अवसर पर तारा देवी, रीता गुप्ता, अभिषेक गुप्ता, रितु अग्रहरि, दिनेश भारती, आशा देवी, लालती देवी, हीरावती देवी, सोनी, कलावती, गीता सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

श्रीमद्भागवत कथा में उद्धव चरित्र, रुक्मणि विवाह , कंस वध आदि की कथा सुनाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 82 ईडब्ल्यूएस पॉकेट 7 में स्वामी रूपानंद ब्रह्मचारी जी महाराज के सानिध्य में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के छठवें दिन कथा व्यास नीलांशु दास जी महाराज ने उद्धव चरित्र, कंस वध एवं रुक्मणि विवाह का रोचक वर्णन किया। भगवान कृष्ण और बलराम कंस के दरबार में प्रवेश करते हैं जहां मदमस्त हाथी को उनके ऊपर छोड़ दिया जाता है , भगवान उसका एक प्रहार से वध कर देते हैं। कंस द्वारा तमाम योद्धाओं को कृष्ण और बलराम को मारने के लिए भेज जाता है। कृष्ण और बलराम सभी को मारकर अपने परमधाम को पहुंचा देते हैं। भगवान कृष्ण अभिमानी कंस के बाल पकड़ कर सिंघासन के नीचे गिरा देते हैं और उसके पापों की याद दिलाते हैं। कृष्ण अपने प्रहार से कंस का अंत कर देते हैं और अपने परमधाम को पहुंचा देते हैं। आरडब्ल्यूए अध्यक्ष राघवेंद्र दुबे ने बताया कि 1 मई को कथा के सातवें दिन सुदामा चरित्र, परीक्षित मोक्ष, शुकदेव विदाई आदि प्रसंगों के साथ कथा का विश्राम होगा। कथा प्रतिदिन सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक होती है। इस मौके पर संयोजक संजीव ढाली, देव मणि शुक्ल, रमेश शर्मा, गोरे लाल, रवि राघव, संजय पांडेय, सर्वेश तिवारी, विष्णु शर्मा, नीरज शर्मा, टोनी कपूर, रमेश वर्मा, निर्मल बिस्वास, गोपाल पाल, असीम मजूमदार, संतोष बिस्वास, मखन बसु, बाबू सरकार, कनाई लाल, असित बाघ, गोविंद बिस्वास, संजय हालदार, तुषार, प्रेम जी, टोनी ढाली , सुखदेव, शुभमय, विश्वजीत सरकार, अनिमेष मंडल, सहित भारी संख्या में सेक्टर वासी मौजूद रहे।

व्यापार संगठन ने डीएम को सौंपा ज्ञापन, बोले- सोनभद्र को बनाएं चार राज्यों का लॉजिस्टिक हब

600-800 एकड़ लैंड बैंक, इको टूरिज्म व फूड प्रोसेसिंग की रखी मांग, रोडवेज स्टैंड का मुद्दा भी उठाया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन सोनभद्र के प्रतिनिधिमंडल ने गुरुवार को जिलाधिकारी से मिलकर व्यापारियों की समस्याओं और जिले के विकास से जुड़े सुझाव रखे। संगठन के जिलाध्यक्ष कौशल शर्मा ने कहा कि सोनभद्र बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमाओं से जुड़ा है। लॉजिस्टिक और ट्रांसपोर्ट की दृष्टि से यहां वेयरहाउसिंग व मल्टी स्टेट हब स्थापित किए जा सकते हैं। इसके लिए 600 से 800 एकड़ जमीन का लैंड बैंक तैयार किया जाए। यदि अधिग्रहण संभव न हो तो लैंड पूलिंग मॉडल अपनाया जाए। इससे सोनभद्र चार राज्यों के व्यापारिक प्रवेश द्वार के रूप में विकसित होकर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देगा। उन्होंने कहा कि जिले में पर्यटन की भी अपार संभावनाएं हैं। मुक्का फाल, धनरौल बांध, विजयगढ़ किला, कंडाकोट पहाड़ी, फॉसिल्स पार्क जैसे स्थलों को इको फ्रेंडली कॉटेज, बर्ड वाचिंग, मेडिटेशन स्पॉट, नेचर ट्रेल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

स्थानीय आदिवासी युवकों को गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जाए। नगर अध्यक्ष प्रशांत जैन ने कहा कि ट्रैकिंग, रॉक क्लाइंबिंग, बोटिंग, कैंपिंग के जरिए एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा सकता है। जिला कोषाध्यक्ष शरद जायसवाल ने कहा कि गेहूं, दालें, चावल यहां के प्रमुख उत्पाद हैं।

ऑर्गेनिक खेती, हर्बल प्रोडक्ट, कोल्ड स्टोरेज व फूड प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित कर कृषि क्षेत्र का विकास संभव है। जिला उपाध्यक्ष राजेश जायसवाल व प्रदीप जायसवाल ने कहा कि क्लस्टर मॉडल से फूड प्रोसेसिंग, ऑर्गेनिक खेती, हर्बल प्रोडक्ट मिलकर मजबूत इकोनॉमी मॉडल बना सकते हैं। सोनभद्र की धरती ऑर्गेनिक खेती के लिए उपयुक्त है।

टीपू अली एवं नागेंद्र मोदनवाल ने कहा कि करोड़ों की लागत से रोडवेज बस स्टैंड बनने के बावजूद फ्लाइओवर के नीचे से बसें संचालित हो रही हैं। यह मुद्दा एक वर्ष से उद्योग बंधु की बैठक में उठाया जा रहा है।

बैठक में कौशल शर्मा, प्रशांत जैन, शरद जायसवाल, राजेश जायसवाल, राजू जायसवाल, सिद्धार्थ सांवरिया, प्रदीप जायसवाल, टीपू अली, कृष्णा सोनी, नागेंद्र मोदनवाल, यशपाल सिंह, विनय जायसवाल, दिनेश सिंह, पंकज कनोडिया, अभिषेक साहू, अभिषेक गुप्ता आदि मौजूद रहे।

फार्मर रजिस्ट्री अभियानः खातेदारों के अंश निर्धारण हेतु चार दिवसीय विशेष पहल प्रारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद में किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ ने फार्मर रजिस्ट्री एवं खातेदारों के अंश निर्धारण हेतु चार दिवसीय विशेष अभियान का शुभारंभ किया गया है। यह अभियान दिनांक 30 अप्रैल से प्रारंभ होकर 3 मई तक संचालित किया जाएगा। अभियान का मुख्य उद्देश्य राजस्व अभिलेखों को अद्यतन करते हुए किसानों से संबंधित डाटा की शुद्धता सुनिश्चित करना है, जिससे उन्हें शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ सुगमता से प्राप्त हो सके।

इस विशेष अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु राजस्व विभाग, कृषि विभाग, जिला पंचायत विभाग एवं विकास विभाग को संयुक्त रूप से कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रत्येक लेखपाल के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, जिनके आधार पर कार्य की प्रगति का मूल्यांकन किया जाएगा। अभियान के दौरान पीएम किसान योजना के अंतर्गत लाभार्थी कृषकों के डाटा में पाई गई त्रुटियों–जैसे मृत्यु प्रमाण पत्र, आधार एवं खतौनी में मिसमैच–को प्राथमिकता के आधार पर ठीक किया जाएगा। साथ ही संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे प्रतिदिन सायं 6:00 बजे तक कार्य प्रगति की रिपोर्ट अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें। जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया है कि निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति न होने पर संबंधित कार्मिकों की जिम्मेदारी तय की जाएगी। उन्होंने सभी विभागों को समन्वय बनाकर कार्य करने तथा अभियान को पूर्ण रूप से सफल बनाने के निर्देश दिए हैं। यह अभियान किसानों के अधिकारों की सुरक्षा एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

प्रकाश जीनियस पब्लिक इंग्लिश स्कूल में हर्षोल्लास से मनी बुद्ध जयंती

छात्रों ने नाटक, चित्रकला व भाषण से दिया सत्य-अहिंसा का संदेश, प्रबंधक बोले- बुद्ध के उपदेश आज भी प्रासंगिक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रकाश जीनियस पब्लिक इंग्लिश स्कूल में बृहस्पतिवार को बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर महात्मा बुद्ध जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित नाटक, चित्रकला एवं भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

नाटक एवं भाषण के माध्यम से बच्चों ने सत्य, अहिंसा और करुणा के आदर्शों व शिक्षाओं के बारे में जानकारी दी। विद्यालय के प्रबंधक राजेंद्र प्रसाद जैन ने अपने संबोधन में कहा कि भगवान बुद्ध के उपदेश आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को सत्य, अहिंसा और करुणा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि इन्हीं मूल्यों से जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी संतोष कुमार पांडे ने कहा कि भगवान बुद्ध का जीवन हमें धैर्य, शांति और सद्भाव का संदेश देता है। छात्रों को अपने दैनिक जीवन में इन आदर्शों को अपनाकर एक अच्छे नागरिक बनने का प्रयास करना चाहिए। प्रधानाचार्य अंबर उपाध्याय ने कहा कि भगवान बुद्ध का जीवन हमें शांति और सद्भावना का संदेश देता है, जिसे हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए। इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य सुरेंद्र यादव, मनोज दुबे तथा अन्य सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रहा।

दिव्यांगजनों के चिन्हांकन शिविर का आयोजन 04 मई से प्रारम्भ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने बताया है कि दिव्यांगजन को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार एवं दिव्यांगजन को उनकी आवश्यकता के अनुसार निःशुल्क कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण प्रदान करने उद्देश्य से विकास खण्ड स्तर पर वृहद चिन्हांकन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आयोजित होने वाले चिन्हांकन शिविर में कृत्रिम अंग/सहायक उपरकरण योजना, शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना, शल्य चिकित्सा योजना, जे0ई0एस0/जेई0 (संचारी रोग) एवं दिव्यांग पेंशन एवं कुष्ठावस्था पेंशन यू0डी0आई0डी0 प्रोजेक्ट योजनाओं/कार्यक्रमों का चिन्हांकन किया जायेगा। जिलाधिकारी ने विकास खण्डों पर 10 बजे से 03:00 बजे तक आयोजित होने वाले शिविर की तिथियों के बारे में बताया है कि 04 मई 2026 को विकास खण्ड महराजगंज, 05 मई को बछरावां में, 06 मई को शिवगढ़ में, 07 मई को हरचन्दपुर, 08 मई को सतावं, 11 मई को खीरों, 12 मई को सरेनी, 13 मई लालगंज, 14 मई अमावां, 15 मई राही, 16 मई जगतपुर, 18 मई ऊँचाहार, 19 मई रोहनियां, 20 मई डलमऊ, 21 मई दीनशाहगौरा, 22 मई सलोन, 23 मई डीह एवं 25 मई को विकास खण्ड छतोह में दिव्यांगजनों को लाभान्वित करने हेतु चिन्हांकन शिविर का आयोजन किया जायेगा।

'पक्षी बचाओ पखवाड़ा' कार्यशाला संपन्न, बच्चों के उत्साह पर एक दिन बढ़ा कार्यक्रम

कला संस्कृति और फिल्म प्रोडक्शन हाउस ट्रस्ट ने तकिया दरगाह विद्यालय में दिया प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। कला संस्कृति और फिल्म प्रोडक्शन हाउस ट्रस्ट सोनभद्र द्वारा कम्पोजिट विद्यालय तकिया दरगाह, ब्लॉक करमा में आयोजित 'पक्षी बचाओ पखवाड़ा' कार्यशाला बुधवार को संपन्न हुई। बच्चों के उत्साह और लगन को देखते हुए कार्यशाला की अवधि एक दिन बढ़ाकर गुरुवार तक कर दी गई थी। संस्था की संस्थापक अध्यक्ष रेनू के नेतृत्व में 24 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चली इस कार्यशाला में प्रशिक्षक रवीन्द्र बहादुर सिंह ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में बच्चों को पक्षियों के महत्व, उनके संरक्षण, दाना-पानी की व्यवस्था और घोंसलों के प्रति संवेदनशीलता के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान बच्चों ने पोस्टर, चित्रकला और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पक्षी संरक्षण का संदेश दिया। संस्था की अध्यक्ष रेनू ने कहा कि बढ़ती गर्मी में पक्षियों को बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है। बच्चों में पर्यावरण व जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम जगाना ही कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था। विद्यालय के शिक्षकों व बच्चों ने कार्यक्रम को सराहा और भविष्य में भी ऐसे आयोजन कराने की मांग की।

उ.प्र उद्योग व्यापार संगठन सोनभद्र का एक प्रतिनिधिमंडल जिलाधिकारी से मिलकर व्यापारियों की समस्याओं से अवगत कराया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। संगठन के जिलाध्यक्ष कौशल शर्मा ने कहा कि हमारा जनपद चार राज्यों बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, की सीमाओं से जुड़ा हुआ है यहां लॉजिस्टिक और ट्रांसपोर्ट की दृष्टिकोण से वेयरहाउसिंग, मल्टी स्टेट हब स्थापित किये जा सकते हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है कि लैंड बैंक तैयार किए जाएं कम से कम 600 से 800 एकड़ जमीन उद्योगों के लिए चिन्हित किए जाएं यदि इतनी जमीन अधिग्रहण हेतु नहीं उपलब्ध हो तो लैंड पूलिंग (भूमि समेकन) मॉडल अपनाया जाए जो बिना अनावश्यक भूमि ग्रहण विवाद के विकास और जनहित के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इससे सोनभद्र चार राज्यों के व्यापारिक प्रवेश द्वार के रूप में विकसित होकर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देगा। श्री शर्मा ने कहा कि इस जनपद में पर्यटन की भी अपार संभावनाएं हैं यह जिला प्राकृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध है यहां पर्यटन को विकसित करने के लिए इको टूरिज्म, एडवेंचर, होटल रिसार्ट, ट्रैवल सर्विस, एवं स्मारिका बाजार इत्यादि स्थापित किया जा सकता है। यहां प्राकृतिक स्थल, जलप्रपात, जलाशय , ऐतिहासिक धरोहरें भी मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि इको टूरिज्म के लिए मुक्का फाल, धनरौल बांध ,विजयगढ़ किला, कंडाकोट पहाड़ी , फॉसिल्स पार्क इत्यादि यह सभी जगह प्राकृतिक आकर्षण के केंद्र है यहां इको फ्रेंडली कॉटेज, बर्ड वाचिंग, मेडिटेशन स्पॉट ,नेचर ट्रेल, के रूप में विकसित किया जा सकता है एवं स्थानीय आदिवासी युवकों को स्थानीय गाइड के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है। नगर अध्यक्ष प्रशांत जैन ने कहा कि एडवेंचर टूरिज्म को शुरू करने हेतु ट्रैकिंग, रॉक क्लाइंबिंग, बोटिंग, कैंपिंग एवं बोन फायर के रूप में विकसित किया जा सकता है। जिला कोषाध्यक्ष शरद जायसवाल ने जिलाधिकारी महोदय का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि जनपद में कृषि एवं फूड प्रोसेसिंग की भी अपार संभावना है यहां का प्रमुख उत्पाद गेहूं , दालें ,चावल प्रमुख है यहां ऑर्गेनिक खेती, हर्बल प्रोडक्ट, कोल्ड स्टोरेज ,एवं वेयरहाउसिंग, फूड प्रोसेसिंग यूनिट, आदि स्थापित कर इस क्षेत्र का विकास किया जा सकता है। जिला उपाध्यक्ष राजेश जायसवाल एवं प्रदीप जायसवाल ने कहा कि क्लस्टर मॉडल अपना कर फूड प्रोसेसिंग, ऑर्गेनिक खेती, हर्बल प्रोडक्ट, यह तीनों मिलकर बहुत मजबूत और इकोनॉमी मॉडल बना सकते हैं उन्होंने कहा कि सोनभद्र की धरती ऑर्गेनिक खेती के लिए उपयुक्त वन क्षेत्र है एग्रो बेस्ट इंडस्ट्रीज के लिए बेहतर जमीन अपेक्षाकृत सस्ती यहां ऑर्गेनिक एवं हर्बल खेती की जा सकती है। टीपू अली एवं नागेंद्र मोदनवाल ने स्थानीय समस्याओं के बारे में ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि करोड़ों की लागत से रोडवेज बस स्टैंड बनने के बावजूद फ्लाइओवर के नीचे से बसें संचालित की जा रही है जबकि इस संदर्भ में पिछले एक वर्ष से उद्योग बंधु की बैठक में यह मुद्दा उठाया जा रहा। बैठक में प्रमुख रूप से कौशल शर्मा, प्रशांत जैन, शरद जायसवाल, राजेश जायसवाल, राजू जायसवाल, सिद्धार्थ सांवरिया प्रदीप जायसवाल, टीपू अली, कृष्णा सोनी,नागेंद्र मोदनवाल, यशपाल सिंह, विनय जायसवाल, दिनेश सिंह, पंकज कनोडिया, अभिषेक साहू, अभिषेक गुप्ता, आदि लोग मौजूद रहे।

थाना चोपन पुलिस का सराहनीय कदम- साइबर ठगी पीड़ित को रु60 हजार की धनराशि वापस दिलाने में मिली सफलता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा के निर्देशन, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) अनिल कुमार के कुशल मार्गदर्शन एवं क्षेत्राधिकारी नगर रणधीर मिश्रा के प्रभावी पर्यवेक्षण में जनपद में साइबर अपराधों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना चोपन पुलिस द्वारा एक सराहनीय सफलता अर्जित की गई है। आवेदक धीरेन्द्र मिश्रा के अनुसार वादी के साथ बीते बुधवार को अज्ञात साइबर अपराधियों द्वारा आधार आईडी सेंटर स्थापित कराने का झांसा देकर यूपीएआई वेब माध्यम से रु1,00,000/- (एक लाख रुपये) की धोखाधड़ी की गई थी। इस संबंध में पीड़ित द्वारा साइबर क्राइम पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई गई थी। प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए थाना चोपन की साइबर हेल्प डेस्क टीम द्वारा त्वरित एवं सुनियोजित कार्यवाही करते हुए तकनीकी विश्लेषण के माध्यम से संदिग्ध लेन-देन का सफलतापूर्वक पता लगाया गया। तत्पश्चात संबंधित बैंक से प्रभावी समन्वय स्थापित कर धनराशि को होल्ड/फ्रीज कराया गया तथा नियमानुसार रिवर्सल प्रक्रिया पूर्ण कराई गई। उक्त प्रभावी कार्यवाही के परिणामस्वरूप ठगी की गई धनराशि में से रु60,000/- (साठ हजार रुपये) सफलतापूर्वक पीड़ित के बैंक खाते में वापस कराई गई। धनराशि प्राप्त होने पर पीड़ित द्वारा थाना चोपन पुलिस टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भूरी-भूरी प्रशंसा की गई। धनराशि वापस कराने वाली टीमः-01. प्र0नि0 अखिलेश कुमार मिश्रा, थाना चोपन, जनपद सोनभद्र। 02. म0आ0 प्राची शुक्ला, साइबर हेल्प डेस्क, थाना चोपन जनपद सोनभद्र। 03. म0आ0 शैलजा सिंह, साइबर हेल्प डेस्क, थाना चोपन जनपद सोनभद्र। साइबर सुरक्षा हेतु महत्वपूर्ण सुझावः- अज्ञात लिंक/एपीके फाइल डाउनलोड करने से बचें। केवल आधिकारिक ऐप स्टोर से ही एप्लिकेशन इंस्टॉल करें। मोबाइल में 'Unknown Sources' विकल्प बंद रखें। किसी भी प्रकार की गोपनीय जानकारी (ओटीपी,पिन, पासवर्ड) साझा न करें। संदिग्ध कॉल/मैसेज से सतर्क रहें एवं तत्काल रिपोर्ट करें। नियमित रूप से मोबाइल की सुरक्षा अपडेट करते रहें। सहायता हेतुः-किसी भी साइबर ठगी की स्थिति में तत्काल 1930 हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करें अथवा www.cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज करें।

शरद परमार, दीपक त्रिपाठी व श्याम बाबू शर्मा क्षेत्रीय अध्यक्ष नियुक्तः भिखारी प्रजापति

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विश्व हिंदू महासंघ उत्तर प्रदेश के यशस्वी प्रदेश अध्यक्ष भिखारी प्रजापति ने हिंदुत्व पुनर्जागरण अभियान के महानायक गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी योगी महाराज जी के मिशन को और गति देने के लिए हस्तिनापुर व ब्रज संभाग के लिए शरद परमार(हाथरस) को क्षेत्रीय अध्यक्ष तथा राजेंद्र शर्मा (गाजियाबाद) को क्षेत्रीय महामंत्री के पद पर नियुक्त किया है। काशी व प्रयाग संभाग के क्षेत्रीय अध्यक्ष पद पर दीपक त्रिपाठी (झांसी) तथा क्षेत्रीय महामंत्री के पद पर राजू सिंह प्रधान (सोनभद्र) को नियुक्त किया है। गोरक्ष व अवध संभाग के अध्यक्ष पद श्याम बाबू शर्मा (गोरखपुर) तथा श्रीवंत तिवारी क्षेत्रीय महामंत्री (लखनऊ) को नियुक्त किया है। विश्व हिंदू महासंघ उत्तर प्रदेश के यशस्वी प्रदेश महामंत्री दिग्विजय सिंह राना ने कहा कि क्षेत्रीय अध्यक्षों को अपने संभाग व मंडल प्रभारियों से राय परामर्श कर नियुक्ति,निष्कासन व पद परिवर्तन पूरा का पूरा अधिकार है। प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों, प्रदेश पदाधिकारियों, संभाग प्रभारियों, मंडल प्रभारियों व जिला अध्यक्षों के संपर्क में रहकर कार्यक्रम को हर स्तर पर सफल बनाने की जिम्मेदारी भी है।

सोनभद्र में दो माह चलेगी मार्निंग कोर्ट,इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में एक मई से 30 जून तक चलेगी प्रातःकालीन कोर्ट

जिले की भौगोलिक स्थिति के साथ ही अत्यधिक गर्मी पड़ने के मद्देनजर प्रति वर्ष मार्निंग कोर्ट का होता है संचालन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में सोनभद्र की अदालतों में दो माह मार्निंग कोर्ट चलेगी। एक मई शुक्रवार से प्रातःकालीन कोर्ट का संचालन शुरू हो जाएगा। जिसकी वजह से न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, कर्मचारियों एवं वादकारियों के नित्य क्रिया में परिवर्तन करना पड़ेगा जिससे शुरुआत में परेशानी होगी। बता दें कि सोनभद्र जिले की भौगोलिक स्थिति अन्य जिलों से भिन्न है। जिसके चलते दो महीने मई और जून माह में भयंकर गर्मी पड़ती है। सोनभद्र बार एसोसिएशन एवं डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के संयुक्त प्रस्ताव पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सोनभद्र में दो माह अर्थात एक मई से 30 जून तक के लिए मार्निंग कोर्ट संचालित करने का निर्देश दिया है। जनपद न्यायाधीश सोनभद्र राम सुलीन सिंह ने प्रातःकालीन कोर्ट का संचालन एक मई से 30 जून तक प्रातः 7 बजे से दोपहर बाद एक बजे तक करने का निर्देश दिया है। वहीं कार्यालय का समय प्रातः 6:30 बजे से दोपहर बाद 1:30 बजे तक होगा। इसके अलावा मध्यावकाश का समय सुबह 10:30 बजे से पूर्वान्ह 11:00 बजे तक रहेगा। यह आदेश जनपद न्यायालय सोनभद्र व अधीनस्थ न्यायालयों, वाह्य न्यायालय अनपरा स्थित ओबरा, दुद्धी व ग्राम न्यायालय घोरावल पर लागू होगा।

मिशन शक्ति 5.0 के दूसरे चरण के अंतर्गत महिला सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण की ओर सशक्त पहल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। महिला सुरक्षा, सशक्तिकरण एवं साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित, महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सोनभद्र पुलिस द्वारा मिशन शक्ति 5.0 के दूसरे चरण के अंतर्गत जनपद में व्यापक एवं प्रभावी जनजागरूकता अभियान संचालित किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अभिषेक वर्मा के कुशल निर्देशन में जनपद के समस्त थाना क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर समाज के सभी वर्गों को जागरूक किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत महिलाओं एवं बच्चों से संबंधित प्रमुख सामाजिक विषयों- जैसे लिंगानुपात, लैंगिक समानता, बाल विवाह, लैंगिक शोषण, महिलाओं एवं बच्चों के प्रति होने वाली हिंसा, साक्षरता एवं स्वास्थ्य-पर विशेष रूप से प्रकाश डालते हुए जनमानस को जागरूक किया गया। इस क्रम में जनपद के समस्त थानों की मिशन शक्ति टीमों द्वारा विद्यालयों, महाविद्यालयों, कोचिंग संस्थानों, बाजारों एवं ग्राम सभाओं में संवाद कार्यक्रम आयोजित कर महिलाओं एवं बालिकाओं को गुड टच-बैड टच, आत्मरक्षा के उपाय, महिला उत्पीड़न से संबंधित विधिक अधिकारों, तथा विभिन्न हेल्पलाइन सेवाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथ ही साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे को दृष्टिगत रखते हुए ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी कॉल/लिंक, सोशल मीडिया के दुरुपयोग, बैंकिंग धोखाधड़ी एवं ओटीपी साझा न करने के संबंध में विशेष जागरूकता उत्पन्न की गई। महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर- 112 - आपातकालीन सेवा, 1090 / 1091-महिला सुरक्षा हेल्पलाइन, 181-महिला हेल्पलाइन,1930 - साइबर अपराध हेल्पलाइन, 1076 - मुख्यमंत्री हेल्पलाइन,

मौजूदा प्रधानों को ही प्रशासक बनाने की मांग,सीएम को भेजा ज्ञापन

सोनभद्र। दुद्धीः पंचायत चुनाव में देरी की आशंका के बीच ग्राम पंचायत मल्देवा की प्रधान सीता जायसवाल ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। उन्होंने मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को संबोधित एक ज्ञापन विकासखंड दुद्धी के सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) आशुतोष श्रीवास्तव को सौंपा है। इस ज्ञापन में पंचायतों के कार्यकाल समाप्त होने के बाद उत्पन्न होने वाली संभावित समस्याओं और ग्रामीण जीवन पर उनके प्रभाव को रेखांकित किया गया है।ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि आगामी 26 मई 2026 को प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। यदि समय पर चुनाव नहीं होते हैं, तो नई पंचायतों के गठन तक प्रशासनिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इससे ग्राम स्तर पर चल रहे विकास कार्य, मनरेगा मजदूरी भुगतान और अन्य आवश्यक सेवाएं बाधित होने की आशंका है, जिसका सीधा प्रभाव ग्रामीणों के दैनिक जीवन पर पड़ेगा।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

तरबूज खाने से पूरे परिवार की मौत,गर्मियों में बढ़ता फूड पॉइजनिंग का रिस्क, जानें लक्षण, सावधानी, बचाव के तरीके

नयी दिल्ली। 25 अप्रैल को मुंबई में एक परिवार के चार लोगों की डायरिया और उल्टी के कारण मौत हो गई। पूरे परिवार ने डिनर के बाद देर रात तरबूज खाया था। अटॉप्सी रिपोर्ट में फूड पॉइजनिंग की पुष्टि हुई है। एक हफ्ते पहले, गुजरात के दाहोद में एक शादी समारोह में खाने के बाद 400 से ज्यादा लोग बीमार पड़ गए। इन्हें उल्टी- दस्त होने लगे। कई लोगों को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। 'अमेरिकन सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन' (सीडीसी) के अनुसार, गर्मियों में फूड पॉइजनिंग के मामले ज्यादा सामने आते हैं।समझेंगे विषय को एक्सपर्टः डॉ. अली शेर, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। इसलिए आज जरूरत की खबर में जानेंगे कि- गर्मियों में फूड पॉइजनिंग क्यों होती है? क्या यह संक्रामक भी हो सकती है? इसके लक्षण क्या हैं? सवाल- फूड पॉइजनिंग क्या होती है? जवाब- यह खराब या संक्रमित भोजन से होने वाली बीमारी है। इसमें उल्टी, दस्त, पेट दर्द, बुखार जैसे लक्षण दिखते हैं। सवाल- फूड पॉइजनिंग क्यों होती है? जवाब- फूड पॉइजनिंग की मुख्य वजह खराब या दूषित भोजन है। गर्मियों में भोजन में जर्म्स या टॉक्सिन्स जल्दी पैदा हो जाते हैं। यह खराब फूड हैंडलिंग और हाइजीन की कमी के कारण होता है। अधपका या बासी खाना खाने से बैक्टीरिया बढ़ जाते हैं। गंदे हाथ, बर्तन या किचन से खाना दूषित हो सकता है। कच्चे और पके भोजन को साथ रखने (क्रॉस-कंटैमिनेशन) से जर्म्स फैलते हैं। दूषित पानी या खुला स्ट्रीट फूड भी वजह है। आमतौर पर फूड पॉइजनिंग इन कीटाणुओं के कारण होती है- बैक्टीरिया साल्मोनेला, ई. कोलाई, वायरस नोरोवायरस, हेपेटाइटिस ए, पैरासाइट, जियार्डिया, क्रिप्टोस्पोरिडियम, टॉक्सिन्स, स्टैफिलोकोकस ऑरियस, क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिनम,

सवाल- गर्मी के मौसम में फूड पॉइजनिंग के केस क्यों बढ़ जाते हैं? जवाब- गर्मी के मौसम में तापमान और नमी (ह्यूमिडिटी) बढ़ जाती है, जो बैक्टीरिया पनपने और बढ़ने के लिए एकदम अनुकूल है। 4सेल्सियस से 60सेल्सियस के बीच का तापमान 'डेंजर जोन' होता है, जिसमें जर्म्स तेजी से बढ़ते हैं।

इस दौरान साल्मोनेला, ई. कोलाई और स्टैफिलोकोकस जैसे बैक्टीरिया जल्दी फैलते हैं। इससे गर्मियों में खाना जल्दी खराब हो जाता है। यही कारण है कि इस मौसम में फूड पॉइजनिंग के मामले ज्यादा आते हैं। सवाल- क्या फूड पॉइजनिंग संक्रामक भी हो सकती है? जवाब- फूड पॉइजनिंग सीधे तौर पर संक्रामक बीमारी नहीं है। अगर इसकी वजह टॉक्सिन्स हैं, तो ये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता। अगर कारण बैक्टीरिया या वायरस हैं तो ये फैल सकते हैं।

गंदे हाथ, संक्रमित भोजन या पानी से बैक्टीरिया दूसरों के शरीर में भी जा सकते हैं। खासकर नोरोवायरस जैसे वायरस तेजी से फैल सकते हैं। इसलिए साफ-सफाई रखना और हाथ धोना जरूरी है। सवाल- फूड पॉइजनिंग और फूड इन्फेक्शन में क्या फर्क है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझते हैं- फूड पॉइजनिंग

भोजन में पनपे टॉक्सिन शरीर में जाकर इन्फेक्शन पैदा करते हैं। टॉक्सिन सीधे पाचन तंत्र को प्रभावित करते हैं। आमतौर पर कुछ घंटों के भीतर ही लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इसके मुख्य लक्षण उल्टी, मतली, पेट दर्द और दस्त हैं। फूड इन्फेक्शन-भोजन के साथ जीवित बैक्टीरिया, वायरस शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ये जर्म्स शरीर के अंदर बढ़ते हैं और संक्रमण पैदा करते हैं। आमतौर पर 12-48 घंटे या उससे अधिक समय बाद लक्षण दिखाई देते हैं।

इसके मुख्य लक्षण दस्त, पेट दर्द, बुखार और कमजोरी है। सवाल- फूड पॉइजनिंग के लक्षण क्या होते हैं? जवाब- फूड पॉइजनिंग होने पर पाचन तंत्र से जुड़े लक्षण दिखते हैं। सवाल- क्या खाने से फूड पॉइजनिंग का रिस्क सबसे ज्यादा होता है? जवाब- कुछ फूड्स में बैक्टीरिया जल्दी पनपते हैं।

इसलिए इनसे फूड कच्चे या अधपके मांस और अंडे में बैक्टीरिया हो सकते हैं। अनपॉश्चराइज्ड दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स से भी जोखिम होता है। कटे हुए फल-सब्जियां और स्ट्रीट फूड जल्दी दूषित हो सकते हैं। बासी या लंबे समय तक बाहर रखा खाना भी खतरनाक होता है। दूषित पानी और बर्फ भी बड़ी वजह हैं। फूड पॉइजनिंग होने पर शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी हो सकती है। इसलिए बॉडी को हाइड्रेटेड रखना जरूरी है। साथ ही डाइजेशन को आराम देने वाली चीजें खाएं। जैसे खिचड़ी, दही, पका केला, ओआरएस, निम्बू पानी, नारियल पानी, सवाल- क्या फूड पॉइजनिंग जानलेवा भी हो सकती है? ज्यादातर मामलों में फूड पॉइजनिंग कुछ घंटों या कुछ दिनों में ठीक हो जाती है। हालांकि संक्रमण गंभीर होने पर यह खतरनाक भी हो सकती है। सवाल- फूड पॉइजनिंग होने पर कब डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? जवाब- अगर लक्षण लंबे समय तक बने रहें या ज्यादा गंभीर हो जाएं, तो तुरंत डॉक्टर से कंसल्ट करना चाहिए। पॉइंटर्स से समझते हैं कौन से लक्षण गंभीर हो सकते हैं- लगातार उल्टी या दस्त। तेज बुखार। चक्कर, कमजोरी और मुंह सूखना। मल में खून आना। छोटे बच्चे, बुजुर्ग या गर्भवती महिला में लक्षण गंभीर होने का इंतजार न करें, उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाएं।

डबल फीफा का प्राइज मनी पूल,गोल्फ- टेनिस की प्राइज मनी मिलकर भी फुटबॉल से कम, हर टीम को करीब 118 करोड़ मिलना तय

वॉशिंगटन। फीफा वर्ल्ड कप के लिए कुल प्राइज मनी 727 मिलियन डॉलर (करीब 6800 करोड़ रुपए) से बढ़ाकर 871 मिलियन डॉलर (8250 करोड़ रुपए) कर दी गई है। यही नहीं, हर टीम को मिलने वाली गारंटीड रकम भी बढ़ाकर 12.5 मिलियन डॉलर (करीब 118 करोड़) कर दी गई है। 2022 में प्राइज पूल 440 मिलियन डॉलर (करीब 3600 करोड़) था, यानी इस बार यह लगभग दोगुना हो गया है। अगर इस सदी की शुरुआत से तुलना करें तो वर्ल्ड कप की प्राइज मनी में जबरदस्त उछाल देखने को मिलता है। 2002 में विजेता टीम को करीब 70 करोड़ रुपए मिलते थे, जो 2006 में 150 करोड़, 2010 में 250 करोड़, 2014 में 290 करोड़, 2018 में 315 करोड़ और 2022 में 350 करोड़ तक पहुंच गए। अब 2026 में विजेता को करीब 420 करोड़ रुपए मिलने का अनुमान है। यह दिखाता है कि पिछले 20-25 साल में प्राइज मनी 500% तक बढ़ चुकी है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण टूर्नामेंट की बढ़ती लोकप्रियता, ब्रॉडकास्टिंग राइट्स और स्पॉन्सरशिप से होने वाली भारी कमाई है। 2026 का वर्ल्ड कप 48 टीमों और 104 मैचों के साथ अब तक का सबसे बड़ा टूर्नामेंट होगा। इसकी मेजबानी अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको मिलकर करेंगे। अगर फीफा की दूसरे खेलों से तुलना करें तो फुटबॉल का दबदबा साफ नजर आता है। ??गोल्फ व टेनिस दोनों की कुल प्राइज मनी मिलाकर भी वर्ल्ड कप से कम है। टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाली सभी 48 टीमों को अमेरिका में टैक्स से राहत मिल सकती है। रिपोर्ट्स के अनुसार फीफा और अमेरिकी ट्रेजरी के बीच बातचीत के बाद फेडरल टैक्स में छूट देने पर सहमति बन रही है। इससे नेशनल फुटबॉल फेडरेशंस को करोड़ों रुपए का फायदा होगा और उनके खर्च का बोझ कम होगा। दरअसल, लंबी यात्रा, ठहरने और ऑपरेशनल लागत के साथ-साथ टैक्स नियमों को लेकर कई टीमों ने चिंता जताई थी, जिसके बाद यह कदम उठाया जा रहा है। वीसा संकट के कारण शामिल नहीं हो सका ईरान- फीफा वर्ल्ड कप से पहले ईरान की टीम पर अनिश्चितता छाई है। वैंकुवर में हुई फुटबॉल लीडर्स की बैठक में ईरानी प्रतिनिधि वीसा समस्याओं के कारण शामिल नहीं हुए। बैठक की अध्यक्षता फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने की। रिपोर्ट्स के अनुसार, यही दिक्कत गुरुवार को होने वाली फीफा कांग्रेस में उनकी मौजूदगी पर भी असर डाल सकती है। एशियाई फुटबॉल संघ के महासचिव विंडसर जॉन ने उम्मीद जताई है कि ईरान जल्द शामिल होगा। अमेरिका-ईरान तनाव भी स्थिति को जटिल बना रहा है। खेल - प्राइज मनी-फीफा वर्ल्ड कप- 8250, गोल्फ एलआईवी- 3800, फेडएक्स कप गोल्- 940, यूएस ओपन टेनिस- 850, (करोड़ रुपए में).

गर्मियों में ओवर फर्मेंटेशन से इन हेल्थ प्रॉब्लम्स का ख़तरा,रखें 5 सावधानियां

नयी दिल्ली। ओडिशा के मयूरभंज जिले के एक सरकारी स्कूल में फर्मेंटेड चावल खाने के बाद एक 12 साल की बच्ची की मौत हो गई। वहीं 150 से ज्यादा बच्चे बीमार पड़ गए। बच्चों ने पखाला भात (फर्मेंटेड चावल), आलू भरता और आम की चटनी खाई थी। इसे खाने के तुरंत बाद उल्टी, दस्त और बेचैनी जैसे लक्षण सामने आए। दरअसल, गर्मियों में ज्यादा टेम्परेचर और ह्यूमिडिटी के कारण फर्मेंटेशन प्रक्रिया तेज हो जाती है, जिससे खाना जल्दी खराब होता है। इसलिए आज जरूरत की खबर में जानेंगे कि- ओवर-फर्मेंटेशन क्या है और ये क्यों खतरनाक है? गर्मियों में फर्मेंटेशन तेजी से क्यों होता है? फूड फर्मेंट करते समय किन बातों का ध्यान रखें? विषय को और समझेंगे डॉ. गौरव जैन, सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, धर्मशिला नारायणा सुपरस्पेशिलिटी हॉस्पिटल, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- फर्मेंटेड फूड क्या होता है? जवाब- फर्मेंटेड फूड वो है, जिसे खमीरीकरण की प्रक्रिया (फर्मेंटेशन) से तैयार किया जाता है। पॉइंटर्स से समझते हैं- इस प्रोसेस में बैक्टीरिया, यीस्ट या अन्य माइक्रोऑर्गेनिज्म स्टार्च और शुगर को एसिड या अल्कोहल में बदल देते हैं। इससे खाने का स्वाद, टेक्सचर और अचार इसके कॉमन उदाहरण हैं। सवाल- फर्मेंटेशन की प्रक्रिया कैसे काम करती है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझते हैं- 1. कच्चा फूड बेस, दूध, आटा, सब्जियां या चावल। इनमें नेचुरल शुगर (कार्ब) होती है। 2. माइक्रोऑर्गेनिज्म (बैक्टीरिया/यीस्ट) बैक्टीरिया/यीस्ट प्राकृतिक रूप से फूड में मौजूद होते हैं। कई बार उन्हें बाहर से मिलाया जाता है। जैसे हम जामन से दही जमाते हैं या ब्रेड के आटे में यीस्ट मिलाते हैं। 3. शुगर का टूटना बैक्टीरिया/यीस्ट शुगर को 'खाकर' उसे तोड़ते हैं। इस प्रक्रिया को केमिकल ब्रेकडाउन कहते हैं। 4. नए पदार्थ बनना शुगर टूटकर लैक्टिक एसिड, गैस या अल्कोहल में बदलती है। जैसे- दही से लैक्टिक एसिड या ब्रेड/डोसा बैटर से गैस (सीओ2)। 5. स्वाद और टेक्सचर खाना थोड़ा खट्टा, फूला हुआ और सॉफ्ट हो जाता है। यही फर्मेंटेशन का असर है। 6. प्रिजर्वेशन -बना हुआ एसिड खराब बैक्टीरिया को बढ़ने से रोकता है। इसलिए कुछ समय तक खाना सुरक्षित रहता है। सवाल- गर्मियों में फर्मेंटेशन तेजी से क्यों होता है? जवाब- इसकी वजह हाई टेम्परेचर और माइक्रोऑर्गेनिज्म की एक्टिवनेस है। गर्मी में बैक्टीरिया और यीस्ट तेजी से बढ़ते हैं। जैसेकि- फर्मेंटेशन में शामिल एंजाइम हाई टेम्परेचर में ज्यादा तेजी से रिएक्शन करते हैं। खाने में मौजूद कार्बोहाइड्रेट जल्दी एसिड या गैस में बदल जाते हैं। गर्मियों में ह्यूमिडिटी भी ज्यादा होती है। यह माइक्रोऑर्गेनिज्म की ग्रोथ को और बढ़ाते है। सवाल- ओवर-फर्मेंटेशन क्या है और ये क्यों खतरनाक है? जवाब- जब किसी फूड को जरूरत से ज्यादा समय तक फर्मेंट होने दिया जाता है, तो उसे ओवर-फर्मेंटेशन कहते हैं। ये कई तरह से खतरनाक होता है। जैसे- खाना जरूरत से ज्यादा खट्टा हो जाता है। ज्यादा समय तक रखने पर बैड बैक्टीरिया पनप सकते हैं। ओवर-फर्मेंटेड फूड में हिस्टामिन ज्यादा बन सकता है। इससे सिरदर्द, स्किन रैश, एलर्जी जैसे रिएक्शन हो सकते हैं। इसके कारण पेट पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। सवाल- गर्मियों में फर्मेंटेड फूड के खराब होने का रिस्क ज्यादा क्यों होता है? जवाब- गर्मियों में तापमान, नमी और माइक्रोऑर्गेनिज्म की तेज एक्टिविटी मिलकर फर्मेंटेड फूड को जल्दी खराब कर देते हैं। इससे- फर्मेंटेशन जरूरत से ज्यादा तेज होकर ओवर-फर्मेंटेशन में बदल जाता है। गर्म माहौल 'गुड' के साथ 'बैड' बैक्टीरिया के लिए भी आदर्श होता है। ज्यादा फर्मेंटेशन से एसिडिटी और गैस प्रोडक्शन बढ़ जाता है। इससे स्वाद बहुत खट्टा, बदबूदार हो जाता है। टेक्सचर भी खराब हो जाता है। सवाल- गर्मियों में ओवर फर्मेंटेड फूड खाने से क्या हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं? जवाब- गर्मियों में फर्मेंटेशन तेज हो जाता है, जिससे फूड जल्दी ओवर-फर्मेंट हो सकता है। यह कंडीशन फर्मेंटेशन के फायदे को नुकसान में बदल देती है और कई हेल्थ प्रॉब्लम्स की वजह बन सकती है। सवाल- किन लोगों को फर्मेंटेड फूड खाते समय सावधान रहना चाहिए? जवाब- फर्मेंटेड फूड हर किसी के लिए सेफ नहीं होता। कुछ लोगों में इसका रिएक्शन जल्दी होता है। इसलिए उन्हें इसे खाते समय खास सावधानी बरतनी चाहिए। सवाल- क्या गर्मियों में फर्मेंटेड फूड बिल्कुल नहीं खाना चाहिए? जवाब- नहीं, पूरी तरह बंद करने की जरूरत नहीं है। लेकिन सावधानी बहुत जरूरी है। अगर फर्मेंटेड फूड सही तरीके से तैयार व स्टोर किए जाएं तो गर्मियों में भी खाए जा सकते हैं।सवाल- कैसे जानें कि फर्मेंटेड फूड खराब हो गया है? जवाब- फर्मेंटेड फूड में हल्का खट्टापन और खास स्मेल सामान्य है। यह फर्मेंटेशन का हिस्सा है। लेकिन जब यही बदलाव 'असामान्य' हो जाए, तो समझिए फूड खराब हो चुका है। जैसे- सामान्य खट्टेपन की जगह तीखी, सड़ी या केमिकल जैसी स्मेल आए।ऊपर सफेद, हरे या काले धब्बे नजर आएं। बहुत ज्यादा चिपचिपा, स्लाइमी या पतला हो जाए। दही/बैटर में पानी अलग हो जाए। प्लास्टिक कंटेनर फूल जाए या खोलते समय बहुत तेज गैस निकले।

हैकिंग को रूटीन बना देना एआई की 'बुद्धिमत्ता' नहीं कहला सकती

मॉडल की नवीनतम सेवा क्लॉड माइथोस प्रिव्यू को जारी किया, लेकिन यह केवल 40 बड़ी टेक-कंपनियों के सीमित समूह के लिए होगा। यह नया मॉडल परफॉर्मेंस में बुनियादी बदलावों का दावा करता है, जिसके साइबर और राष्ट्रीय सुरक्षा पर गहरे प्रभाव हो सकते हैं। क्लॉड माइथोस के डेवलपमेंट के दौरान एंथ्रोपिक ने पाया कि यह न केवल किसी भी मॉडल की तुलना में अधिक जटिलता और आसानी से सॉफ्टवेयर कोड लिख सकता है, बल्कि अपनी इस क्षमता के चलते यह दुनिया के लगभग सभी प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टमों में व्याप्त कमजोरियों को भी पहले की तुलना में अधिक आसानी से खोज सकता है। लेकिन अगर यह टूल गलत हाथों में चला गया, तो वे दुनिया के लगभग हर प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टम- यहां तक कि इस समूह में शामिल कंपनियों द्वारा बनाए सिस्टमों को भी हैक कर सकते हैं। यह कोई पब्लिसिटी-स्टंट नहीं है। इस घोषणा से पहले, प्रमुख टेक-कंपनियों के प्रतिनिधि ट्रम्प प्रशासन के साथ निजी तौर पर इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि इसका उन देशों की सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जो इन असुरक्षित सॉफ्टवेयर प्रणालियों का उपयोग करते हैं। एंथ्रोपिक ने अपने एक लिखित बयान में कहा कि पिछले केवल एक महीने में ही माइथोस प्रिव्यू ने हजारों गंभीर कमजोरियों की पहचान की है। ये हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में शामिल हैं। एआई जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसके मद्देनजर ऐसी क्षमताओं का व्यापक होना अब दूर नहीं है। और संभव है कि वे उन पक्षों से भी आगे फैल जाएं, जो इन्हें सुरक्षित रूप से उपयोग करने की बात करते हैं।सुपर-इंटेलिजेंट एआई अपेक्षा से कहीं तेजी से सामने आ रहा है। यह तो पहले से स्पष्ट था कि एआई किसी भी व्यक्ति- चाहे उसकी कम्प्यूटर साक्षरता का स्तर कुछ भी हो- को सॉफ्टवेयर कोड लिखने में असाधारण रूप से सक्षम बना रहा है। लेकिन बताया जाता है कि स्वयं एंथ्रोपिक ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह इतनी जल्दी, इतनी दक्षता के साथ, मौजूदा कोड में खामियों को खोजने और उनका दोहन करने के तरीकों को पहचानने में सक्षम हो जाएगा। क्लॉड माइथोस ने हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में गंभीर कमजोरियों की पहचान की है- ये ऐसे सिस्टम हैं, जिन पर दुनिया भर में बिजली ग्रिड, जल आपूर्ति तंत्र, एयरलाइन आरक्षण प्रणालियां, रीटेलिंग नेटवर्क, सैन्य प्रणालियां और अस्पताल निर्भर हैं। यदि यह टूल व्यापक रूप से उपलब्ध हो जाता है, तो इसका अर्थ होगा कि किसी भी प्रमुख बुनियादी ढांचे की प्रणाली को हैक करने की क्षमता- जो पहले केवल निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों और खुफिया एजेंसियों तक सीमित थी, वह अब छोटे समूहों को भी उपलब्ध हो सकती है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे केवल जिम्मेदार हाथों तक ही सीमित रहें। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,थॉमस एल. फ्रीडमैन) आतंकी संगठन, देश के लिए सुलभ हो सकती है। इस समस्या का समाधान दुनिया का कोई भी देश अकेले नहीं कर सकता। शुरुआत दो एआई महाशक्तियों- अमेरिका और चीन को करनी होगी। यह बहुत जरूरी हो गया है कि वे आपस में सहयोग करना सीखें, ताकि बुरी ताकतें इस साइबर क्षमता तक पहुंच न बना सकें। यह उतना ही बुनियादी महत्व का है, जितना एटमी हथियारों के बाद परमाणु अप्रसार संधियां थीं। जटिल साइबर हैकिंग अभियानों को विकसित करने की जो क्षमता पहले बड़े देशों, सेनाओं, कंपनियों और बड़े बजट वाले आपराधिक संगठनों तक सीमित थी, वह अब छोटे समूहों को भी उपलब्ध हो सकती है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे केवल जिम्मेदार हाथों तक ही सीमित रहें। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,थॉमस एल. फ्रीडमैन)

न्यायाधीश को सियासी दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति ठीक नहीं

इस वर्ष की शुरुआत में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को शराब नीति मामले में ट्रायल कोर्ट ने इस आधार पर आरोपमुक्त कर दिया कि उनके खिलाफ प्रथम दृष्टया कोई मामला नहीं बनता है। इस फैसले को सीबीआई ने दिल्ली हाई कोर्ट में चुनौती दी। सुनवाई के दौरान मामले ने तब अप्रत्याशित मोड़ लिया, जब केजरीवाल ने एक आवेदन दायर कर यह मांग की कि सुनवाई कर रही जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा इस मामले से स्वयं को अलग कर लें, क्योंकि उन्हें पक्षपात की आशंका है। यद्यपि इस आवेदन को खारिज कर दिया गया, लेकिन यह घटना एक परिचित प्रश्न को फिर सामने लाती है- आखिर किसी जज को कब किसी मामले की सुनवाई से अलग होना चाहिए? भारत में रीक्यूजल (स्वयं को अलग करने) का कानून अपेक्षाकृत स्पष्ट है, भले ही उसके प्रयोग पर अकसर बहस होती रहती हो। इसका मूल परीक्षण यह है कि क्या एक सामान्य, समझदार व्यक्ति के मन में पक्षपात की आशंका उत्पन्न होती है। यह कोई हल्का मानदंड नहीं है। अदालतों ने लगातार यह कहा है कि ऐसी आशंका ठोस तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए, न कि केवल अस्पष्ट संदेह या राजनीतिक असहमति पर। समय के साथ कुछ सीमित और स्पष्ट आधार विकसित हुए हैं- जैसे आर्थिक हित, उसी मामले में पूर्व भागीदारी, या किसी पक्ष के साथ निकट व्यक्तिगत संबंध। इनसे परे, विशेषकर वैचारिक या संस्थागत पक्षपात के आरोपों में, मापदंड काफी ऊंचा होता है। अकसर देखा गया है कि उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश राजनीतिक रूप से संवेदनशील मामलों की सुनवाई से स्वयं को अलग कर लेते हैं। गुजरात और इलाहाबाद उच्च न्यायालयों में राहुल गांधी से जुड़े कई मामलों में न्यायाधीशों ने बिना कारण बताए स्वयं को अलग किया है। कई बार इसे न्यायाधीश का अपने दायित्व से विमुख होना भी माना गया। लेकिन केजरीवाल के मामले में स्थिति उलट थी। यहां न्यायाधीश सुनवाई के लिए तैयार थे, परंतु पक्षकार को आपत्ति थी। रीक्यूजल आवेदन में कई आधार प्रस्तुत किए गए- जैसे न्यायाधीश द्वारा पहले दिए गए आदेश, कुछ तकनीकी आपत्तियां और न्यायाधीश के परिजनों का सरकारी पेनलों में शामिल होना। अदालत ने इन तर्कों को इस आधार पर खारिज कर दिया कि वे पक्षपात की आशंका स्थापित नहीं करते। अदालत का यह निर्णय उचित था- किसी भी न्यायिक निर्णय में एक पक्ष संतुष्ट होगा और दूसरा असंतुष्ट। हारने वाला पक्ष यह तय नहीं कर सकता कि वह उसी न्यायाधीश के सामने पेश नहीं होगा। यही बात न्यायाधीश के परिजनों के पेशेवर जीवन पर भी लागू होती है। सबसे विवादास्पद तर्क वैचारिक निकटता से जुड़ा था। यह कहा गया कि जस्टिस शर्मा ने अधिवक्ता परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया है, जो एक ऐसा संगठन है, जिसकी वैचारिक दिशा याचिकाकर्ता और उनकी राजनीतिक पार्टी के विपरीत है। भारत में संवैधानिक परंपरा ने कभी भी केवल वैचारिक या राजनीतिक संबद्धता को रीक्यूजल का आधार नहीं माना है। इस संदर्भ में जस्टिस वीआर कृष्ण अय्यर का उदाहरण महत्वपूर्ण है। सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्ति से पहले वे कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े रहे थे और केरल सरकार में कानून मंत्री भी थे। उस समय यह आशंका जताई गई थी कि उनकी विचारधारा उनके निर्णयों को प्रभावित कर सकती है। लेकिन उनके कार्यकाल ने सिद्ध किया कि पूर्व वैचारिक जुड़ाव अपने आप में न्यायिक पक्षपात में परिवर्तित नहीं होता। उन्होंने मजदूरों, कैदियों, महिलाओं और बच्चों जैसे वंचित वर्गों के अधिकारों पर कई प्रगतिशील फैसले दिए। इससे यह सिद्धांत और मजबूत होता है कि जज बनने के बाद न्यायाधीश कानून से बंधा होता है। यही सिद्धांत उन आरोपों पर भी लागू होता है जो सार्वजनिक मंचों में भागीदारी के आधार पर लगाए जाते हैं। केवल इस आधार पर कि किसी न्यायाधीश ने किसी विशेष संगठन के कार्यक्रम में भाग लिया है- जो कि न्यायिक समुदाय में असामान्य नहीं है- पक्षपात की उचित आशंका नहीं मानी जा सकती। इसके लिए यह दिखाना आवश्यक है कि उस भागीदारी और विवादित मामले के बीच कोई स्पष्ट और प्रत्यक्ष संबंध है। यदि सामान्य वैचारिक जुड़ाव ही रीक्यूजल का आधार बन जाए, तो संवैधानिक निर्णय असम्भव हो जाएंगे। यह घटना न्यायपालिका को राजनीतिक दृष्टिकोण से देखने की बढ़ती प्रवृत्ति को भी दर्शाती है। राजनीतिक मुद्दों पर संघर्ष सड़कों और संसद में होना चाहिए, अदालतों में नहीं। पक्षकारों को समझना चाहिए कि बार-बार रीक्यूजल की मांग न्याय प्रणाली को प्रभावित करती है। वहीं न्यायाधीशों को भी अब अपने शब्दों और आचरण के प्रति जिम्मेदार रहना होगा। (ये लेखकों के अपने विचार हैं,अर्घ्य सेनगुप्ता और स्वप्निल त्रिपाठी)

किसी के लिए उम्मीद ही सबसे अच्छा गिफ्ट हो सकता है

सुगि अमाया (29) की कहानी किसी बड़े अभियान से नहीं, बल्कि एक सन्नाटे के साथ शुरू हुई। जुलाई 2022 में उनका संसार बिखर गया, जब उनके 24 साल के भाई एलेक्सिस को पापा जॉन्स पिज्जेरिया से लेट-नाइट शिफ्ट करके लौटते वक्त पुलिस ने पकड़ लिया। आरोप एल-साल्वाडोर का वही जाना-पहचाना था- गैंग से जुड़ाव। किसी ट्रायल और कानूनी रास्ते के बगैर ही एलेक्सिस को वो जेल सिस्टम निगल गया, जो पूरे देश के लिए पुलिसिया जाल बन चुका था।यह सेंटूल अमेरिका के सबसे छोटे देश एल-साल्वाडोर की हकीकत है। 2022 की शुरुआत में हत्याओं में तेज बढ़ोतरी के बाद राष्ट्रपति नायिब बुकेले ने आपातकाल लगा दिया। जो कदम अपराध के खिलाफ शुरू हुआ, धीरे-धीरे ऐतिहासिक सख्ती में बदल गया। आज इस देश में दुनिया की सर्वाधिक कारावास दर है, जहां कार्रवाई की शुरुआत से अब तक 91 हजार से ज्यादा लोग गिरफ्तार किए जा चुके हैं। यह वयस्क आबादी का करीब 2फीसदी है। मानवाधिकार संगठनों ने चेताया है कि 'अरेस्ट कोटा' के चलते पुलिस गरीबों को निशाना बना रही है। एलेक्सिस जैसे लोगों को अकसर सिर्फ टैटू या अनजान सूचना के आधार पर पकड़ लिया जाता है। नतीजतन, इस देश में बहुत बड़ा विरोधाभास है। आंकड़ों में तो एल-साल्वाडोर दुनिया के सबसे हिंसक देशों में से एक से बदलकर पश्चिमी गोलार्ध के सबसे सुरक्षित देशों में शामिल हो गया। लोग नई आजादी की बात करते हैं- मसलन, रात में बेखौफ चल पाना या बिना वसूली के दुकान चला पाना। लेकिन इस सुरक्षा की भयानक कीमत पीछे छूट गए परिवारों को चुकानी पड़ी है। बुनियादी सुविधाओं की किल्लत वाली और भीड़ भरी जेलों में बंद रिश्तेदारों के लिए खाना और दवाएं जुटाना गरीबों के जीवन का संघर्ष बन गया है। एलेक्सिस की गिरफ्तारी के बाद सुगि का जीवन राजधानी सैन-साल्वाडोर के एक कन्वर्टेड मूवी थिएटर के बाहर के फर्श तक सिमट गया है। यह जगह जटिल जेल सिस्टम में आने-जाने वालों के लिए ठहराव स्थल है। जेल की दीवारों की छांव अब सुगि का दूसरा घर बन गई है। भाई की गैरमौजूदगी की इस रिक्तता में कड़वाहट उनके मन में आ सकती थी। लोहे के इन दरवाजों में उन्हें सिर्फ दुश्मन ही दिख सकते थे। लेकिन उन्होंने इनमें एक आईना देखना चुना। बच्चों को अपनी मां के पास छोड़कर सुगि रात भर इंतजार करती हैं। एल-साल्वाडोर में कैदियों की

रिहाई बहुत कम और अकसर बिना सूचना के तड़के ही होती है। तब कोई रिश्तेदार कागजों पर साइन करने के लिए न हो तो कैदी वापस भीतर भेज दिया जाता है। इसे रोकने के लिए सुगि अजनबियों के लिए वहां रहती हैं। वह बिना किसी सोच-विचार के एक साफ शर्ट और जूते लेकर रिहा हुए लोगों के पास जाती हैं और रिलीज फॉर्म पर साइन करती हैं। धीरे से कहती हैं, 'अब आप ठीक हैं।' सुगि की आवाज उन्हें फिर से जिंदगी से जोड़ती है। जरूरतमंदों को वह घर जाने का किराया देती हैं और जिनके पास कोई जगह नहीं, सुगि का छोटा-सा घर ही ठिकाना होता है- जहां गर्म खाने और बिस्तर से उनका 'क्रिमिनल' का टैग धुल जाता है। जब लोग पूछते हैं कि वे अनजान लोगों के लिए क्यों गंदगी में रातें बिताती हैं, तो सुगि को एलेक्सिस याद आता है। उनकी उम्मीद किसी चक्र जैसी है। उन्हें भरोसा है कि अजनबियों के साथ सम्मान से पेश आकर वे दुनिया में इतनी रोशनी फैला रही हैं, जो उस अंधेरी कोठरी तक पहुंचेगी, जहां उनका भाई है। वे ऐसी दुनिया बना रही हैं, जिसमें वे चाहती हैं कि उनका भाई लौटे। आज सुगि का मिशन बढ़ चुका है। पूरे अमेरिका महाद्वीप से परिवार उन्हें मदद भेजते हैं। जिनकी उन्होंने मदद की थी, वे इसमें योगदान दे रहे हैं।

अब वे कानून की छात्रा हैं, लेकिन उनका 'फुल-टाइम जॉब' दूसरों के लिए जेल सिस्टम से जूझना ही है। फंडा यह है कि अजनबियों को बचाने के इस काम में सुगि ने खुद को निराशा से बचा लिया और साबित किया कि उम्मीद बांटी जाए तो यह सबसे ताकतवर तोहफा बन जाती है। (एन. रघुरामन)

युद्ध को लेकर ट्रम्प के पास अब समय कम ही बचा है

अमेरिका-ईरान युद्ध को चलते अब दो माह हो गए। वेनेजुएला के अनुभव से अति-उत्साहित होकर अमेरिका ने सोचा था कि ईरान पर अचानक हमला और उसके सर्वोच्च नेता समेत शीर्ष अधिकारियों की हत्या की रणनीति से युद्ध कुछ ही दिनों में खत्म हो जाएगा। लेकिन रणनीति सफल नहीं हुई। ईरान में सत्ता परिवर्तन हुआ, लेकिन अब वहां इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) का शासन चल रहा है। ईरान में दो समानांतर सैन्य ढांचे हैं। 'आर्तेश' नियमित सेना के तौर पर परंपरागत प्रतिरक्षा का जिम्मा संभालती है, जबकि आईआरजीसी का काम क्रांति की रक्षा करना है। एक सेना राष्ट्रपति के जरिए सर्वोच्च नेता को रिपोर्ट करती है, जबकि दूसरी सीधे उन्हीं को। अमेरिका-इजराइल की शुरुआती बमबारी के बाद 'बंधक संकट' सामने आया। ईरान ने खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के देशों और हॉर्मुज स्ट्रेट को एक तरह से बंधक बना लिया। इस स्थिति से निपटने के दो विकल्प थे। पहला, मिलिट्री एस्केलेशन यानी ईरानी जमीन पर सैनिक भेजना और ईरानी ढांचों पर हमले। और दूसरा, कूटनीतिक समझौता। ट्रम्प ने दूसरा रास्ता चुनते हुए ईरान को बड़ी आर्थिक रियायतों की पेशकश की है। बदले में उसके संवर्धित यूरेनियम भंडार सौंपने और हॉर्मुज को खोलने की मांग की है। ट्रम्प के दावों के विपरीत ईरान ने प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उसे लगता है कि वे भरोसे लायक नहीं और उनकी मांग ईरान के आत्मसमर्पण जैसी है। अमेरिका जो पेशकश कर रहा है, वह 2015 की संयुक्त व्यापक कार्य योजना (जेसीपीओए) और उन प्रस्तावों से भी बदतर है, जो युद्ध से पहले ओमान की मध्यस्थता वाली बातचीत में ?दिए गए थे। ईरान को यह भी लगता है कि अब इसे स्वीकार करने की बाध्यता नहीं, क्योंकि सत्ता परिवर्तन तो वह झेल ही चुका है। साथ ही उसने यह भी जान लिया है कि हॉर्मुज स्ट्रेट बंद करना आर्थिक युद्ध में बेहद प्रभावी हथियार है। फिलहाल आगे की राह का अनुमान लगाया जा सकता है। अमेरिका संभवतः सैनिक नहीं भेज कर बातचीत ही जारी रखेगा। ट्रम्प शैली के अनुसार इसमें कुछ धमकियां होंगी, कुछ बमबारी संभव है। लेकिन अमेरिका के लिए समय अब हाथ से निकल रहा है। हमले शुरू करने से पहले अमेरिका को यह समझना चाहिए था कि सैन्य अभियान से क्या हासिल हो सकता है। सैन्य क्षमता के लिहाज से ईरान अमेरिका का मुकाबला नहीं कर सकता, लेकिन उसके पास बैलिस्टिक मिसाइलों और प्रॉक्सी नेटवर्क जैसी अहम क्षमताएं हैं। अमेरिका को यह भी पता होना चाहिए ?था कि इस्लामिक शासन की आंतरिक एकजुटता और संगठित विपक्ष के अभाव के चलते वहां सत्ता परिवर्तन आसान नहीं। साथ ही, इसके लिए जमीनी सैन्य अभियान जरूरी है, जो अमेरिका चाहता नहीं था। अमेरिका-इजराइल के सैन्य हमलों ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम को काफी नुकसान जरूर पहुंचाया है, लेकिन इससे तरह, ईरान के मिसाइल और ड्रोन के जखीरे को कम किया जा सकता है, लेकिन खत्म करना मुश्किल है। खासकर, इस हथियार कार्यक्रम को सपोर्ट करने वाले तकनीकी ज्ञान और औद्योगिक ढांचे को। सच तो यह है कि अमेरिका-इजराइल ने खामेनेई एवं अन्य नेताओं की हत्या करके बड़ी गलती कर दी। अब ट्रम्प खुद ही कह रहे हैं कि ईरान में नेतृत्व बिखरा हुआ है और बातचीत के लिए कोई है ही नहीं। संघर्ष विराम बढ़ाने और समुद्री नाकेबंदी कड़ी करने से अमेरिका को समय मिल सकता है, लेकिन इससे ईरान झुकेगा नहीं। नाकेबंदी का असर दिखने में महीनों लग सकते हैं। ट्रम्प में इतना धैर्य नहीं। नवंबर में चुनाव भी हैं। (ये लेखक के अपने विचार हैं, मनोज जोशी)

वैज्ञानिक ज्ञान और मानव पूंजी को समाप्त नहीं किया जा सकता। इतिहास गवाह है कि जो देश परमाणु हथियार चाहते हैं, वे जैसे-तैसे पा ही लेते हैं। ज्यादा से ज्यादा अमेरिका-इजराइल इसे कुछ समय टाल सकते हैं। इसी

मात्र 7 करोड़ में बनिए अमिताभ बच्चन के पड़ोसी!

अयोध्या। एक वीडियो में अमिताभ बच्चन खुद को अयोध्या का निवासी बता रहे हैं। पिछले महीने खबर आई थी कि अमिताभ बच्चन ने अयोध्या में तीसरी प्रॉपर्टी खरीद ली। इधर, अयोध्या में जहां अमिताभ बच्चन के प्लॉट हैं, उसके आसपास की जमीन बहुत महंगी हो गई है। लोग अमिताभ बच्चन का पड़ोसी बनने के लिए 10 लाख रुपए प्रीमियम चार्ज भी दे रहे हैं। उन्होंने बताया- 'अयोध्या का सरयू घाट आस्था और प्रगति का एक अनोखा संगम बन चुका है...। यहां आने लगे हैं करोड़ों लोग दुनिया के कोने-कोने से। स्वागत है आपका... अयोध्या के इस स्वर्णिम काल में, जिसका मैं भी निवासी हूं...।' अमिताभ बच्चन को अयोध्या का निवासी बताना, उनके पड़ोस में महंगे दामों पर प्लॉट बेचना... यह सब एक रियल एस्टेट कंपनी और अमिताभ बच्चन की कंपनी की स्ट्रैटजी है। अमिताभ बच्चन ने रियल एस्टेट कंपनी की ब्रांडिंग करते हुए यह वीडियो बनाया। कंपनी ने उन्हें पैसा न देकर अयोध्या में अपनी टाउनशिप में प्लॉट दे दिए। इसे 'बार्टर सिस्टम' कहा जाता है। यहां तक तो ठीक है, लेकिन इसके बाद कंपनी ने स्मार्ट ट्रिक अपनाई। उन्होंने अमिताभ को अयोध्या का निवासी बताते हुए उनके प्लॉट के आसपास के प्लॉट पर प्रीमियम चार्ज लिया। श्रीराम जन्मभूमि से 7 किमी दूर आजमगढ़ बायपास पर 'द सरयू प्रोजेक्ट' है। यहीं पर अमिताभ बच्चन के नाम पर 3 प्रॉपर्टी हैं। कुछ जगह निर्माण चल रहा था। जगह-जगह अमिताभ बच्चन के होर्डिंग्स लगे हैं, जिस पर वे खुद का भरोसा दे रहे हैं। हालाँकि अमिताभ बच्चन का प्लॉट देखने के लिए गेट पर मौजूद गार्ड भीतर नहीं जाने देता। पर वो बताता हैं कि जानकारी के लिए सआदतगंज तिराहे पर कंपनी के ऑफिस में संपर्क करें।

दुनिया के तपते रेगिस्तानों से भी गर्म यूपी का एक शहर,अमेरिका की डेथ वैली का 57, लुत मरुस्थल का पारा 71 डिग्री तक पहुंचा था-अब ये कितने गर्म

लखनऊ। यूपी के बांदा की चर्चा इन दिनों देश-दुनिया में है। कारण है, भीषण गर्मी। 27 अप्रैल को यहां का तापमान 47.6डिग्री तक पहुंच गया। इस दिन यह दुनिया का सबसे गर्म शहर दर्ज किया गया। सवाल उठा कि दुनिया में भीषण तपने वाले रेगिस्तानों से भी यह गर्म है? अगर हां, तो वहां का तापमान कितना है? मौसम वैज्ञानिक कहते हैं- बांदा का तापमान पिछले 20 साल से लगातार बढ़ रहा है। जून, 2019 में तो यहां का पारा 49डिग्री पार कर गया था। मौसम वेबसाइट एक्यूवेदर के मुताबिक, 27 अप्रैल, 2026 को राजस्थान के थार रेगिस्तान का तापमान 46डिग्री और अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान का 30डिग्री था। दुनिया में डेथ वैली, लुत रेगिस्तान गर्मी का पर्याय, वहां कितनी गर्मी-दुनिया में सबसे गर्म स्थानों में डेथ वैली, लुत मरुस्थल और इथियोपिया देश का डलोल है। यहां तापमान अलग-अलग तरीकों से मापा जाता है। हवा के तापमान के आधार पर- विश्व मौसम विज्ञान संगठन के मुताबिक, अमेरिका की डेथ वैली को दुनिया की सबसे गर्म जगह माना जाता है। 10 जुलाई, 1913 को यहां हवा का तापमान 56.7डिग्री दर्ज किया गया था। हालांकि, 27 अप्रैल, 2026 को यहां का तापमान 28डिग्री था। जमीन के तापमान के आधार पर- जमीन के तापमान के आधार पर ईरान का लुत मरुस्थल दुनिया में सबसे ज्यादा गर्म रहता है। नासा के सैटेलाइट ने 2003 से 2009 के बीच यहां की जमीन का तापमान 70.7डिग्री दर्ज किया था। यहां के कुछ हिस्से इतने गर्म हैं कि जीवन असंभव है। 27 अप्रैल को यहां का तापमान 27डिग्री था। औसत तापमान के आधार पर- औसत तापमान के आधार पर इथियोपिया देश की डलोल एक ऐसी जगह है, जहां सालभर गर्मी रहती है। यहां सालभर तापमान करीब 34-35डिग्री रहता है। 27 अप्रैल को यहां का तापमान 35डिग्री था। लखनऊ के आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र के सीनियर साइंटिस्ट अतुल कुमार सिंह कहते हैं- बांदा की जमीनें उबड़-खाबड़ पठार और मैदान हैं। यहां की जमीन में ग्रेनाइट और विंध्य पर्वत की चट्टानें हैं। पत्थर और चट्टानों की खूबी होती है कि ये सूरज के ताप से बहुत जल्दी गर्म हो जाती हैं, लेकिन ठंडी धीरे-धीरे होती हैं। इससे सूरज डूबने के बाद भी वातावरण में भीषण गर्मी महसूस होती रहती है। बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डॉ. दिनेश शाह कहते हैं- राजस्थान से आ रही गर्म हवाएं बांदा का तापमान और बढ़ा रही हैं। तेज धूप और वातावरण में नमी की कमी के कारण तपन ज्यादा महसूस हो रही है। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह बताते हैं- तापमान मापने के लिए लकड़ी के एक बॉक्स में पारे वाला थर्मामीटर रखा जाता है। ये बॉक्स इस तरह से बना होता है कि हवा इसके अंदर से गुजर सके। जिस इलाके का तापमान मापना होता है, वहां इसे 24 घंटे के लिए छोड़ दिया जाता है। थर्मामीटर दिनभर तापमान मापता है और सबसे ऊंचे तापमान वाले पॉइंट पर जाकर रुक जाता है। बाद में इसे मौसम वैज्ञानिक रिकॉर्ड कर लेते हैं। बांदा कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डॉ. दिनेश शाह ने बताया- तीन विभाग बांदा में तापमान मापते हैं। मौसम विभाग कलेक्ट्रेट के आसपास तापमान रिकॉर्ड करता है। यूपी डिजास्टर मैनेजमेंट ने हर तहसील में डिजिटल और ऑटोमैटिक सेंसर लगाए हैं। बांदा कृषि विश्वविद्यालय ऑटोमैटिक सेंसर और पारे वाला थर्मामीटर से तापमान मापता है। ये यूनिवर्सिटी शहर से 5-6 किलोमीटर दूर है। विश्वविद्यालय की रीडिंग देहात क्षेत्र की मानी जाती है। बांदा के आसपास के जिलों में भी तेज गर्मी पड़ रही है। हालांकि, तापमान बांदा से कम है। 27 अप्रैल को जब बांदा का तापमान 47.6डिग्री पहुंचा, तब उससे लगने वाले फतेहपुर, हमीरपुर, महोबा और चित्रकूट में भी तापमान 46 के करीब था। मौसम विभाग के मुताबिक, आने वाले दिनों में वहां भी तापमान धीरे-धीरे बढ़ेगा। बुंदेलखंड के बांदा, झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा और चित्रकूट में गर्मी का पैटर्न लगभग एक जैसा रहने वाला है। मतलब सारे जिले 44 से 46डिग्री तापमान तक गर्म होते हैं।

'पाकिस्तान में धोखे से किया गया इस्तेमाल', इस्लामाबाद में भड़की अमेरिकी महिला पत्रकार, जमकर हंगामा

इस्लामाबाद। ईरान-अमेरिका वार्ता कवर करने के लिए पाकिस्तान गए पत्रकारों का इस्लामाबाद में एक कार्यक्रम में जाना विवाद का सबब बन गया है। इस्लामाबाद में पाकिस्तानी पत्रकारों के एक ग्रुप ने विदेशी रिपोर्टरों के लिए अनौपचारिक कार्यक्रम आयोजित किया था। कार्यक्रम विवादों में घिर गया क्योंकि इसके मंच से पाक आर्मी चीफ असीम मुनीर और पीएम शहबाज शरीफ पर जमकर निशाना साधा गया। इस्लामाबाद में इस कार्यक्रम में शामिल हुईं अमेरिकी पत्रकार केटलिन डोर्नबोस ने इसे एक धोखा करार दिया है। केटलिन उन पत्रकारों में शामिल थीं, जो अमेरिका-ईरान शांति वार्ता को कवर करने के लिए पाकिस्तान आए थे। उन्हें इस्लामाबाद प्रेस क्लब में एक अनौपचारिक 'मिलने-जुलने' (मीट एंड ग्रीट) के कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम में राजनीतिक बयानबाजी का जिक्र करते हुए कैटलिन डोर्नबोस ने कहा कि उनका 'इस्तेमाल' किया गया है। विदेशी पत्रकार हैरान रह गए

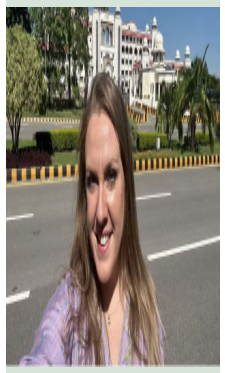

जानकारी के मुताबिक, इस कार्यक्रम में पाकिस्तान के दो पत्रकारों- मतिउल्लाह जान और असद अली तूर ने देश में प्रेस की आजादी और पत्रकारों के उत्पीड़न का मुद्दा उठाया। उन्होंने शहबाज शरीफ सरकार की आलोचना करते हुए गैर-न्यायिक हत्याओं पर चिंता जताई। साथ ही असीम मुनीर को भी निशाने पर लिया। कार्यक्रम के बाद विदेशी और पाकिस्तानी पत्रकारों की ग्रुप फोटो और बयान जारी किया गया। इससे यह संकेत मिला कि वे सरकार की आलोचना के साथ एकजुटता दिखा रहे हैं।

ऐसे में पाकिस्तान आए विदेशी पत्रकारों ने ना सिर्फ इस पर सफाई दी बल्कि यह भी कहा कि उनको कार्यक्रम की सही जानकारी नहीं दी गई।

न्यूयॉर्क पोस्ट की रिपोर्टर डोर्नबोस ने सबसे पहले इस कार्यक्रम से खुद को अलग किया, जिन्हें ट्रंप समर्थक माना जाता है।

उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा कि वह ठगा महसूस कर रही हैं क्योंकि वह इस कार्यक्रम में एक पेशेवर हैसियत से शामिल हुई थीं। उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि उनकी तस्वीरें किसी राजनीतिक नैरेटिव में इस्तेमाल होंगी।

डोर्नबोस ने अपनी तस्वीरों के इस्तेमाल पर सवाल खड़ा किया। उन्होंने कहा कि क्या किसी ने उन विदेशी पत्रकारों से पूछा कि उनको कैसे लगेगा, जिनकी तस्वीरें इस मामले से जोड़ी गईं।

हम यहां मेहमान हैं और हमें इस तरह की राजनीति में नहीं घसीटा जाना चाहिए था। उनकी पोस्ट की पाकिस्तान में काफी ज्यादा चर्चा है। पाकिस्तानी पत्रकार ने इस्तीफा दिया-इस्लामाबाद में इस कार्यक्रम पर विवाद खड़ा होने के तुरंत बाद ही इसका असर देखा गया। विवाद के बाद पत्रकार मतिउल्लाह जान ने नियो न्यूज टीवी से इस्तीफे का ऐलान कर दिया। उन्होंने कहा कि यह पहली बार नहीं है और ना ही यह पहली सरकार है,

जब ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा है। इससे पता चलता है कि कार्यक्रम में शामिल लोगों को सरकार के दबाव का सामना करना पड़ रहा है।

अमेरिका-इजराइल पर बादल चुराने का आरोप,इराकी सांसद बोले- इससे मिडिल ईस्ट में सूखा पड़ता है, ईरान जंग में व्यस्त हुए तो बारिश वापस आई

तेहरान। ईरान युद्ध के बीच इराकी सांसद अब्दुल्ला अल-खैखानी ने अमेरिका और इजराइल पर मिडिल ईस्ट में बादल चुराने का आरोप लगाया है। अब्दुल्ला अल-खैखानी ने एक इंटरव्यू में कहा कि अमेरिका और इजराइल कई सालों से विमानों की मदद से मिडिल ईस्ट में बादलों को चुराते रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी कारण क्षेत्र में लंबे समय से सूखा पड़ रहा था। सांसद ने दावा किया कि अब अमेरिका और इजराइल ईरान के साथ युद्ध में मसरूफ हैं, इसलिए बारिश फिर से लौट आई है। बयान सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर इस दावे को लेकर चर्चाएं और अफवाहें तेज हो गईं। मौसम विशेषज्ञों ने कहा कि ऐसी कोई तकनीक मौजूद नहीं है, जिससे बादलों की चोरी की जा सके। इराक मौसम विभाग के प्रवक्ता अम्र अल-जबीरी ने इस दावे को न वैज्ञानिक बताया और न ही तार्किक। उन्होंने कहा कि पिछले साल सितंबर में ही अनुमान लगा लिया गया था कि 2026 इराक के लिए बारिश वाला साल रहेगा। विशेषज्ञों ने मौसम से जुड़े झूठे दावों और साजिश की थ्योरी से बचने की अपील की है। अल-खैखानी ने दावा किया है कि मिडिल ईस्ट में मौसम बदलने वाले हथियार का इस्तेमाल कर सूखा पैदा किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि वायुमंडल में बदलाव कर जानबूझकर बारिश रोकी गई। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, खैखानी ने कहा कि 'एटमॉस्फेरिक मॉडिफिकेशन वेपन' का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने दावा किया कि इस तकनीक से वायुमंडल में बदलाव कर मिडिल ईस्ट में सूखा पैदा किया गया। तुर्किये में भारी बारिश को भी कुछ लोगों ने इसी कथित साजिश से जोड़ दिया। एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा गया कि युद्ध के कारण अमेरिकी विमान तुर्किये के एयरस्पेस में नहीं जा पा रहे, इसलिए वहां लगातार बारिश हो रही है। यह पोस्ट 10 लाख से ज्यादा बार देखा गया। कुछ यूजर्स ने दावा किया कि ईरान में दशकों से चला आ रहा सूखा, अमेरिका के ठिकानों पर हमले के पांच दिन के भीतर खत्म हो गया। एक्सपर्ट्स- मौसम को नियंत्रित करने वाली तकनीक मौजूद नहीं- एक्सपर्ट्स का कहना है कि ऐसे दावे भरोसे की कमी और जलवायु की समझ की कमी से पैदा होते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि मौसम की दिशा या तीव्रता को सीधे नियंत्रित करने वाली कोई तकनीक मौजूद नहीं है। इसके उलट, मिडिल ईस्ट में बढ़ते चरम मौसम के पीछे जलवायु परिवर्तन को जिम्मेदार बताया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र यूनिवर्सिटी के कावेह मदानी के मुताबिक, क्लाउड सीडिंग को राजनीतिक हथियार की तरह पेश किया जा रहा है। क्लाउड सीडिंग में बादलों पर छोटे कैमिकल (जैसे सिल्वर आयोडाइड) कण डाले जाते हैं, ताकि बारिश हो सके। हालांकि वैज्ञानिक कहते हैं कि इसका असर बहुत सीमित होता है। यह मौजूदा बादलों से अधिकतम 15फीसदी तक ही बारिश बढ़ा सकता है।

कुछ लोग मानते हैं कि एक जगह क्लाउड सीडिंग करने से पड़ोसी इलाकों से बारिश छीन ली जाती है। खलीफा यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डायना फ्रांसिस के मुताबिक, इसे ऐसे समझिए कि यह बादलों को हल्का सा धक्का देता है, मौसम को कंट्रोल नहीं करता। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के मुताबिक, हाल के दशकों में इस क्षेत्र का तापमान वैश्विक औसत से दोगुनी दर से बढ़ा है। इससे हीटवेव लंबी और ज्यादा तीव्र हो रही हैं और बारिश का पैटर्न भी अनियमित हो गया है। कुल बारिश कम हो रही है, लेकिन जब होती है तो बहुत तेज होती है, जिससे फ्लैश फ्लड या सूखे का खतरा बढ़ता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि इससे पानी को लेकर लोगों की चिंता बढ़ती है, जिससे इस तरह की अफवाहें तेजी से फैलती हैं।

भारत और नेपाल के बीच 75 साल पुरानी मैत्री संधि होगी 'रीएक्टिव'? एक्सपर्ट ने बताया बालेन सरकार से रिश्ते बनाने का नया रास्ता

काठमांडू। नेपाल की नई बालेन्द्र शाह ऊर्फ बालेन शाह की सरकार ने बेहद खामोशी के साथ तेजी से काम करना शुरू कर दिया है। खुद प्रधानमंत्री बालेन शाह चुपचाप काम कर रहे हैं और करीब एक महीने के कार्यकाल के दौरान उन्होंने ना तो जनता को संबोधित किया है, ना मीडिया से बात की है और ना ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से ही कोई ऐलान किया है। इसका मतलब है कि वो शोर शराबे से दूर ठोस काम करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। पिछले एक महीने में जो सवाल सबसे ज्यादा उठे हैं वो ये कि नेपाल की विदेश नीति क्या होगी? बालेन शाह एक नये प्रधानमंत्री हैं और उनकी विदेश नीति क्या होगी ये सिर्फ अनुमान है। नेपाल, भारत चीन बांग्लादेश भूटान और पाकिस्तान का पड़ोसी है इसलिए इसका रणनीतिक महत्व काफी ज्यादा है। इसीलिए चीन यहां अपने पैर पसारने के लिए हाथ पैर मारता रहा है, अमेरिका दशकों से अपना दबदबा बनाने की कोशिश करता रहा है और भारत को नेपाल में चीन और अमेरिका की मौजूदगी असहज करता रहा है। नेपाल में कम से कम पिछले 8-10 सालों से एक आवाज जो उठी है वो है 1950 के उस समझौते को रीसेट करने की जिसके तहत 'इंडो-नेपाल ट्रीटी ऑफ पीस एंड फ्राइंडशिप' के साथ दोनों देशों के संबंध की नींव रखी गई थी। बालेन शाह की सरकार बनने के बाद एक बार फिर से इस ट्रीटी को रीसेट करने की मांग की जा रही है। नेपाल के कई लोगों ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इस ट्रीटी के बारे में लिखा है। लिहाजा जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर ये समझौता क्या है, इसपर नेपाल के नेता क्यों सवाल उठाते रहे हैं और भारत का इस समझौते को लेकर क्या स्टैंड रहा है? नेपाल के कई नेता कर चुके इस समझौते को रीसेट करने की मांग पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने 2008 में प्रधानमंत्री बनने के बाद इस संधि को खत्म करने की मांग की थी।

प्रचंड ने 2022 में अपने दिल्ली दौरे के दौरान भी इस संधि में संशोधन की मांग की थी। उन्होंने जुलाई 2022 में अपनी भारत यात्रा के दौरान भी इस संधि की समीक्षा करने और ईपीजी रिपोर्ट को स्वीकार करने पर जोर दिया था। पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने 2018 के चुनावों के दौरान इस संधि को नेपाल के लिए 'असमान' बताया था। डॉ. बाबूराम भट्टराई ने भी 1950 की संधि सहित सभी 'असमान संधियों' को रद्द करने और पंचशील के सिद्धांतों के आधार पर नए संबंधों की वकालत की थी। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री कीर्ति निधि बिष्ट ने 1969 में इस संधि को 'पुराना और अप्रचलित' करार दिया था। नेपाल के पूर्व विदेश मंत्री कमल थापा ने भी 1950 में किए गये इस संधि में संशोधन की मांग की थी। भारत और नेपाल दोनों 2014 में संधि की 'समीक्षा' और 'समायोजन' करने पर सहमत हुए थे लेकिन अभी तक आधिकारिक तौर पर इस संधि में संशोधन नहीं हुआ है। बालेन शाह बतौर प्रधानमंत्री कुछ महीनों में भारत की यात्रा करने वाले हैं और इस दौरान भारत के साथ एजेंडे में कई तरह के मुद्दे शामिल हैं। इस दौरान कुछ मतभेद और कुछ विवाद के विषय भी हैं। इसीलिए माना जा रहा है कि अब जब नेपाल में एक भारी बहुमत वाली सरकार सत्ता में आ गई है तो 1950 की 'शांति और मैत्री संधि' और सीमा विवाद जैसे मुद्दों पर चर्चा शुरू की जा सकती है। दिल्ली के जवाहरलाल यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज की प्रोफेसर अंशु जोशी से नवभारत टाइम्स ने इस संधि पर बात की। उन्होंने एनबीटी ऑनलाइन को बताया 'भारत और नेपाल के बीच 1950 में ये समझौता किया गया था और ये संधि दोनों देशों की सीमा सुरक्षा और आंतरिक सुरक्षा पर आधारित थी। लेकिन तब से लेकर आज तक की परिस्थितियों को देखें और अभी तक की रिश्तों की यात्रा को देखें तो नेपाल के रणनीतिक लोकेशन और नेपाल के शासकों को देखें तो ये संधि बहुत महत्वपूर्ण रहा है। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा है और नेपाल के जहां तक हथियारों के आयात की बात है तो भारत की 'स्वीकृति' या 'पारदर्शिता' की एक बिंदू है। भारत के लिए महत्वपूर्ण ये रहा है कि नेपाल हथियारों का हब नहीं बन जाए जहां से हथियारों की कालाबाजारी हो या आतंकवाद को बढ़ावा मिले। इसीलिए इस बिंदू को इस संधि में रखने का मकसद भारत को अपनी आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करनी थी।' प्रोफेसर अंशु जोशी, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू-'नेपाल अब इस संधि में संशोधन चाहता है और बालेन शाह अपनी विदेश नीति को गतिशील बनाना चाह रहे हैं और भारत और चीन, दोनों को देखते हुए बैलेंस बनाना चाह रहे हैं। भारत के संदर्भ में पहले उनके कुछ नकारात्मक बयान आए थे लेकिन अब वो काफी सकारात्मक हैं। ऐसे में भारत इस संधि को रिव्यू करने के लिए पहले से ही तैयार रहा है लेकिन कुछ बिंदू जैसे सीमा सुरक्षा और हथियारों का आयात, ये ऐसे मुद्दे हैं ये भारत के लिए संवेदनशील हैं और नेपाल को भी ये समझना होगा कि नेपाल की रणनीतिक स्वायत्तता या उसकी संप्रभुता पर किसी भी तरह से भारत की तरफ से चुनौती नहीं है। भारत की शक्ति का कोई दबदबा नहीं है। इसीलिए भारत से नेपाल को कोई खतरा नहीं है इसीलिए मुझे लगता है की बालेन शाह की सरकार को इसे खत्म करने के बजाए इसके रिव्यू पर विचार करना चाहिए।' भारत के नेपाल में राजदूत रह चुके रंजीत रे ने डेक्कन हेराल्ड में लिखा है 'भारत के लिए सबसे बढ़कर नेपाल के नए नेतृत्व के साथ आपसी विश्वास और समझ का एक सौहार्दपूर्ण रिश्ता बनाना बेहद जरूरी है। इस दिशा में कुछ प्रगति पहले ही हो चुकी है।' प्रधानमंत्री मोदी ने बालेन शाह को जीत की बधाई देते हुए उन्हें भारत आने का न्योता दिया और अगले महीने भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री काठमांडू जा रहे हैं जहां वो आधिकारिक तौर पर बालेन शाह को नई दिल्ली आने का न्योता देंगे। इससे पहले दोनों देश बालेन शाह के दौरे को लेकर एजेंडा तय कर रहे हैं। रंजीत रे ने लिखा है भारत और नेपाल के लिए 'विदेश मंत्रियों के स्तर पर 'संयुक्त आयोग' की बैठक आयोजित करना महत्वपूर्ण है। राजनीतिक स्तर पर समय-समय पर समीक्षा करना और उसके बाद द्विपक्षीय परियोजनाओं की नियमित रूप से संयुक्त निगरानी करना, बेहतर क्रियान्वयन और कार्यकुशलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन तंत्रों को और ज्यादा मजबूत किए जाने की आवश्यकता है और द्विपक्षीय संबंधों में आने वाले उतार-चढ़ावों का इन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। जलविद्युत सहयोग के क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। 6,000 मेगावाट की विशाल और बहुउद्देशीय 'पंचेश्वर परियोजना' पर शीघ्र सहमति बन जाने से दोनों देशों के संबंधों में एक युगांतकारी परिवर्तन आएगा।' इसीलिए सवाल ये है कि अगर बालेन शाह का नेपाल 1950 में किए गये उस संधि में संशोधन की मांग करता है तो भारत क्या करेगा? नेपाल का तर्क है कि संधि पर नेपाल की ओर से तत्कालीन प्रधानमंत्री मोहन शमशेर ने हस्ताक्षर किए थे जबकि भारत की तरफ से राजदूत सीपीएन सिंह ने । इसे नेपाल की प्रतिष्ठा और समानता के विरुद्ध माना जाता है। यह संधि नेपाल के राणा शासन के दौरान हुई थी जो उस समय अलोकप्रिय और अलोकतांत्रिक था। माना जाता है कि उन्होंने अपनी सरकार बचाने के लिए भारत के साथ समझौता किया था। इस संधि के अनुच्छेद 2 और 5 के तहत नेपाल को किसी भी 'पड़ोसी देश' के साथ रक्षा संबंधों या हथियार खरीदने से पहले भारत से परामर्श करना पड़ता है। 1988 में जब नेपाल ने चीन से हथियार खरीदे तो भारत ने इसे संधि का उल्लंघन माना और ट्रांजिट पाइंट्स पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया था। इसे नेपाल में आज भी कड़वी याद के तौर पर देखा जाता है। नेपाल की नई पीढ़ी और राष्ट्रवादी नेता इसे 'औपनिवेशिक अवशेष' मानते हैं। उनका मानना है कि 1950 की सुरक्षा चिंताएं (जैसे तिब्बत पर चीन का कब्जा) अब वैसी नहीं रहीं और संधि को आधुनिक समय के अनुसार 'रीसेट' करने की जरूरत है। इन चिंताओं को दूर करने के लिए दोनों देशों ने प्रख्यात व्यक्तियों का समूह (ईपीजी - 'एमिनेंट पर्सन्स ग्रुप) बनाया था। इसने कई साल पहले ही संधि में संशोधन की सिफारिशों वाली एक रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया था लेकिन भारतीय नेतृत्व की तरफ से उस दस्तावेज को औपचारिक रूप से स्वीकार करने से इनकार करने की वजह से इसे अंतिम रूप नहीं दिया जा सका है। नेपाल इस संधि के अहम प्रावधानों, जिनमें अनुच्छेद 5 (हथियारों का आयात) भी शामिल है उसमें संशोधन करना चाहता है ताकि वह अपनी स्वायत्तता को और मजबूती से स्थापित कर सके। लिहाजा अब देखना होगा कि क्या बालेन शाह अपने दिल्ली दौरे के दौरान क्या इस संधि में संशोधन की मांग करते हैं या नहीं और अगर करते हैं तो भारत की तरफ से क्या प्रतिक्रिया दी जाती है।

परमाणु हथियारों और मिसाइलों पर नहीं करेंगे समझौता- ईरान के सुप्रीम लीडर ने अमेरिका को हड़काया सीधे-दो टूक

तेहरान। ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई ने कहा है कि फारस की खाड़ी क्षेत्र में नई शुरुआत हो रही है और इसका भविष्य अमेरिका के बिना तय होगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस्लामी गणराज्य अपनी परमाणु और मिसाइल क्षमताओं को राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में संरक्षित करेगा। ईरान की सरकारी मीडिया में जारी उनके संदेश में कहा गया कि खामेनेई ने होर्मुज जलडमरूमध्य पर किसी भी तरह से समझौते से इनकार किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि फारस की खाड़ी में अमेरिकियों का एकमात्र स्थान इसके पानी की गहराई में है और इस क्षेत्र के इतिहास में एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। यह संदेश इस्लामिक रिपब्लिक न्यूज एजेंसी (आईआरएनए) ने 'नेशनल पर्शियन गल्फ डे' के मौके पर जारी किया है। यह दिन 1622 में पुर्तगाली सैनिकों को होर्मुज जलडमरूमध्य से बाहर निकाले जाने की याद में मनाया जाता है। खामेनेई ने कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य सदियों से बाहरी ताकतों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है और कई देशों ने यहां प्रभाव जमाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि फरवरी के अंत से ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजरायल की ओर से शुरू की गई जंग के दौरान ईरानी लोगों ने अपने बलों की दृढ़ता, सतर्कता और साहस को करीब से देखा है। उन्होंने दावा किया कि फारस की खाड़ी क्षेत्र का उज्ज्वल भविष्य बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त होगा और यह अपने लोगों की प्रगति, सुविधा और समृद्धि के लिए काम करेगा। उनके अनुसार, यह बदलाव क्षेत्रीय देशों के हित में होगा और स्थानीय ताकतों की भूमिका को मजबूत करेगा। गौरतलब है कि फारस की खाड़ी और होर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिहाज से बेहद अहम माना जाता है। इस क्षेत्र में लंबे समय से अमेरिका की सैन्य और रणनीतिक मौजूदगी रही है, जबकि ईरान लगातार इसका विरोध करता आया है। खामेनेई ने कहा कि ईरान होर्मुज जलडमरूमध्य को सुरक्षित करेगा और विदेशी 'लालच और द्वेष' को समाप्त करेगा।

पुण्यतिथिः ऋषि कपूर को सलमान के पिता ने धमकाया,राज कपूर ने सिगरेट पीने पर पीटा, दाऊद के साथ चाय पी

मुंबई। आज से 6 साल पहले सुबह खबर आई कि ऋषि कपूर अब नहीं रहे। कुछ दिन पहले तक वो गंभीर हालत होने के बावजूद हॉस्पिटल स्टाफ को हंसाते तो कभी

गाना सुना रहे थे। एक न्यूज़ पोर्टल से बात करते हुए ऋषि कपूर की इकलौती बेटी रिद्धिमा कहती हैं, 'सब अचानक हुआ, वो बहुत डरावना दिन था। अचानक एक खालीपन आ गया। एक सूनापन, उनकी जिंदगी उनकी मौजूदगी लार्जर देन लाइफ थी।' ऋषि कपूर 3 साल के थे, जब वो पिता राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' में चॉकलेट की लालच में नजर आए। तब से उनका सिनेमा से ऐसा रिश्ता जुड़ा, जो ताउम्र कायम रहा। 1973 की फिल्म 'बॉबी' से फिल्मों में आए ऋषि कपूर उर्फ चिंटू ने 'रफूचक्कर', 'कर्ज', 'प्रेम रोग', 'चांदनी' जैसी बेहतरीन फिल्में कीं। बढ़ती उम्र के साथ उन्होंने 'अग्निपथ', 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर', 'कपूर एंड संस', 'नमस्ते लंदन', 102 नॉट आउट जैसी फिल्में कीं। रिद्धिमा कहती हैं, 'उनमें सिनेमा के लिए जुनून था। बहुत पैशनेट थे। हम उनकी फिल्मों के सेट पर जाते थे। वो एक कोने में किरदार की तैयारी करते थे।' आगे रिद्धिमा बताती हैं-स्कूल में। जब टीचर हमें कहती थी कि हमने कल आपके पापा की फिल्म देखी, बड़ा मजा आया। फ्रेंड्स भी बोलते थे कि तुम्हारे पापा और मम्मा कितने फेमस हैं। जब हम खाने बाहर जाते थे तो भी इतने सारे लोग आकर ऑटोग्राफ लेते थे। तो हम सोचते थे कि इतनी सारी भीड़ क्यों इकट्ठा हो रही है? हम पूछते थे कि आप क्या लिख रहे हो, तो वो समझाते थे, हम एक्टर हैं, क्योंकि हम फिल्म में काम करते हैं।' रिद्धिमा कहती हैं कि ऋषि कपूर भले ही एक स्टार थे, लेकिन परिवार के लिए वो एक बेहतरीन फैमिली मैन थे, जिनके लिए प्रायोरिटी हमेशा परिवार था। रिद्धिमा कहती हैं, 'वो हमें बहुत वेकेशन पर ले जाते थे, जब शूटिंग करते थे, तो हमारी समर वेकेशन ऐसे प्लान करते थे कि काम भी हो जाए और घूम भी सकें। जो करते थे हमारे अराउंड करते थे। वो हमें सबसे पहले तवज्जो देते थे। उन्होंने परिवार को हमेशा प्रायोरिटी दी।''हमारी शनिवार को छुट्टी होती थी, वो शाम को बिजी रहते थे, तो हमें दिन में लंच पर ले जाते थे। उन्होंने एक गेम भी बनाया था, रेपिड फायर जैसा। कार में वो आगे और मैं, रणबीर, मम्मा पीछे बैठते थे। वो जल्दी-जल्दी 10 सवाल पूछते थे, सही जवाब देने वाले को ट्रीट मिलती थी।' ऋषि कपूर का अचानक दुनिया से रुख्सत होना, परिवार के लिए जोरदार धक्का था। इस पर रिद्धिमा कहती हैं, 'बहुत खालीपन महसूस होता है। इतना कि बता नहीं सकती। वो टाइम बहुत खराब था। मैं मम्मी (नीतू सिंह) के साथ थी। मेरी, रणबीर, आलिया की पहली प्रायोरिटी थी कि मम्मी ठीक हों। हम उनको बिजी रखते थे कि कैसे भी उन्हें बाहर ले जाना है, उन्हें डिस्ट्रैक्ट करना है, क्योंकि ये बहुत अचानक हुआ था। मैं एक्सप्रेस नहीं कर सकती। वो बहुत डरावनी फीलिंग थी। बहुत खालीपन हो गया। बहुत सूनापन। मैं आज भी कभी उन्हें पास्ट टेंस में रिफर नहीं कर पाती। मैं हमेशा बोलती हूं कि वो अभी हैं, हमें गाइड कर रहे हैं, हमें प्यार कर रहे हैं, आशीर्वाद दे रहे हैं।' 'मैं उनसे कई बातें करना चाहती हूं। मुझे कहना है कि हम सब आपको बहुत सेलिब्रेट करते हैं पापा। हम हर रोज फैमिली वीडियो कॉल पर आपकी बातें करते हैं कि अगर आप होते तो क्या बोलते, क्या करते। आज तक एक दिन भी ऐसा नहीं गया, जब आपकी बात न हो।' बेटी रिद्धिमा के मुताबिक, पिता ऋषि कपूर लार्जर देन लाइफ जिंदगी जीते थे। इसका परिणाम वो किस्से हैं, जो उनकी बेबाकी, हाजिरजवाबी, गुस्से और मजेदार व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। कभी उन्होंने अमिताभ को दिया जा रहा अवॉर्ड खरीदकर अपने नाम किया, तो कभी सलमान खान के पिता की धमकी का जवाब दिया। डिंपल कपाड़िया से अफेयर भी चर्चा में रहा और अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम से हुई उनकी मुलाकात भी विवाद की वजह बनी। किस्सा-1, चॉकलेट की लालच में 3 साल के ऋषि कपूर ने की एक्टिंग-4 सितंबर 1952,बॉम्बे के मटुंगा स्थित राज कपूर बंगलो में कृष्णा कपूर ने बेटे ऋषि को जन्म दिया। वो तीन भाइयों में मंझले थे। रणधीर कपूर (करीना-करिश्मा के पिता) बड़े थे और राजीव कपूर (छोटे)। पिता राज कपूर शोमैन थे। ऋषि महज 3 साल के थे, जब पिता राज कपूर, नरगिस के साथ श्री 420 बना रहे थे। फिल्म के मशहूर गाने प्यार हुआ इकरार हुआ में जब राज कपूर को चाइल्ड आर्टिस्ट की जरूरत पड़ी, तो वो अपने बच्चों को सेट पर ले आए। गहरी आंखें और चबी

गाल वाले ऋषि हर किसी का ध्यान खींच लिया करते थे। सेट पर उन्हें दूसरे बच्चों के साथ बारिश में भीगना था, लेकिन नाजुक चिंटू जी के ऊपर जैसे ही बूंदें गिरतीं, वो रोना शुरू कर देते। कई बार शॉट खराब हुए और रील्स बर्बाद होने लगीं। तब नरगिस धीरे से उनके पास आईं और कहा, अगर वो बिना रोए शॉट पूरा करते हैं, तो वो उन्हें ढेर सारी चॉकलेट देंगी। खाने-पीने के शौकीन चिंटू राजी क्यों न होते। और इस तरह ऋषि कपूर ने 1955 की फिल्म श्री 420 से बतौर चाइल्ड एक्टर फिल्मों में एंट्री ली। किस्सा-2, कार में भरकर मुगल-ए-आजम के सेट पर ले जाते थे दादा पृथ्वीराज कपूर-1960 में आई फिल्म मुगल-ए-आजम में ऋषि कपूर के दादाजी पृथ्वीराज कपूर ने बादशाह अकबर का किरदार निभाया था। वो अकसर घर के सभी बच्चों को कार में भरकर सेट पर ले जाते थे। तब ऋषि कपूर 6 साल के थे। सारे बच्चे मधुबाला की खूबसूरती देख रहे थे, लेकिन ऋषि कपूर की नजरें दिलीप कुमार पर टिकी थीं। किस्सा- 3, राज कपूर ने सिगरेट पीते देख कर दी पिटाई-करीब 15 साल की उम्र में दोस्तों की वजह से ऋषि कपूर को सिगरेट पीने की लत लग गई। वो मुंबई के चैंपियन स्कूल के बाहर कोकाकोला स्टैंड की दुकान से अहमद नाम के दुकानदार से सिगरेट लिया करते थे। एक समय में दुकान में उनकी 300 रुपए उधारी हो गई। एक दिन गुस्से में अहमद से कहा कि अगर उधारी नहीं चुकाई, तो वो राज कपूर को बता देंगे। एक दिन ऋषि कपूर पिता के मेकअप मैन के साथ सिगरेट के कश लगा रहे थे, तभी राज कपूर पहुंच गए। रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद राज कपूर ने ऋषि कपूर को खूब पीटा।बता दें कि स्टार बनने के बाद ऋषि कपूर 300 रुपए उधार चुकाने गए थे, लेकिन तब अहमद ने पैसे नहीं लिए और उन्हें बस गले लगा लिया। किस्सा-4, डिंपल कपाड़िया को दी, गर्लफ्रेंड की दी हुई अंगूठी- ऋषि कपूर को स्कूल के दिनों में पारसी यास्मीन नाम की लड़की से पहला प्यार हुआ। उन्होंने ही बॉबी से डेब्यू करने वाले ऋषि कपूर को वजन घटाने में मदद की थी। एक दिन यास्मीन ने ऋषि को एक अंगूठी गिफ्ट की, जो वो हमेशा पहने रखते थे। बॉबी की शूटिंग के समय ऋषि कपूर और डिंपल में गहरी दोस्ती हो गई। डिंपल अक्सर उनकी अंगूठी पहन लिया करती थीं। धीरे-धीरे वो अंगूठी डिंपल की ही हो गई। डिंपल को शादी के लिए प्रपोज करते हुए राजेश खन्ना ने ऋषि कपूर की वो अंगूठी उतरवाकर समुद्र में फेंकी और फिर अपनी अंगूठी पहनाई थी। तब रिपोर्ट्स आईं कि ऋषि ने ही वो अंगूठी डिंपल को पहनाई थी। यही वजह रही कि ऋषि कपूर की गर्लफ्रेंड यास्मीन ने उनसे ब्रेकअप कर लिया। डिंपल कपाड़िया और ऋषि की डेब्यू फिल्म बॉबी (1973) सुपरहिट रही थी। लेकिन फिर डिंपल ने राजेश खन्ना से शादी कर फिल्मों से ब्रेक ले लिया। किस्सा-5, पैसे देकर खरीदा पहला अवॉर्ड, अमिताभ से हुई अनबन- फिल्म बॉबी (1973) के लिए ऋषि कपूर को फिल्मफेयर बेस्ट एक्टर अवॉर्ड मिला था। उस साल ऋषि के अलावा अमिताभ बच्चन भी फिल्म जंजीर के लिए नॉमिनेटेड थे। हर तरफ चर्चा थी कि अवॉर्ड अमिताभ को ही मिलेगा, लेकिन ऋषि कपूर ने 30 हजार रुपए में वो अवॉर्ड खरीद लिया। ऐसा उन्होंने पीआरओ तारकनाथ गांधी और अपने सेक्रेटरी घनश्याम के कहने पर लिया। जैसे ही अमिताभ बच्चन को पता चला कि ऋषि ने अवॉर्ड खरीदा है तो दोनों के बीच कोल्डवॉर छिड़ गई। ऋषि कपूर ने अपनी ऑटोबायोग्राफी खुल्लम-खुल्ला में लिखा कि उन्हें अवॉर्ड खरीदने का पछतावा था और शर्म थी। इसके बाद अमिताभ बच्चन उनसे नाराज हो गए थे। किस्सा-6, फ्यूचर वाइफ नीतू सिंह से लगवाते थे एक्स गर्लफ्रेंड यास्मीन को कॉल, होटल में देख दिल टूटा- ऋषि कपूर यास्मीन से रिश्ता बरकरार रखना चाहते थे। फिल्म जहरीला इंसान की शूटिंग के समय ऋषि, को-स्टार और दोस्त नीतू सिंह ने यास्मीन को कॉल लगवाते थे, लेकिन जवाब नहीं मिलता था। एक दिन ऋषि ताज होटल में थे, तभी उन्हें यास्मीन दिखीं, जो वहां, ऋषि के ही एक पुराने दोस्त के साथ आई थीं। ये देख ऋषि कपूर का दिल टूट गया। 2 हजार लेकर पहुंचे ऋषि कपूर ने 18 हजार रुपए की शराब पी ली। बाद में उनका मैनेजर से खूब झगड़ा हुआ। किस्सा-7, सलीम-जावेद ने दी थी करियर तबाह करने की धमकी, जवाब में कहा- करके दिखाओ- जंजीर, शोले लिखने वाले सलीम-जावेद का 80 के दशक में बड़ा नाम था। हर कोई उनकी लिखी फिल्म करना चाहता था। एक बार राइटर जोड़ी ने ऋषि कपूर को फिल्म ऑफर की, जो उन्होंने ठुकरा दी। सलीम-जावेद इससे चिढ़ गए। एक दिन उनकी मुलाकात प्लेमेट क्लब में हुई। सलीम खान (सलमान के पिता) ने ऋषि को देखते ही कहा- तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारी फिल्म ठुकराने की। जवाब मिला- मुझे फिल्म पसंद नहीं आई। सलीम ने गुस्से में कहा- तुम जानते नहीं हो क्या कि इंडस्ट्री में आजतक हमें किसी ने इनकार नहीं किया। हम तुम्हारा करियर तबाह कर सकते हैं। ये सुनकर ऋषि कपूर ने कहा- आप मुझे बर्बाद करने के लिए क्या कर सकते हैं। सलीम ने कहा- तुम्हारे साथ कौन काम करेगा, क्या तुम जानते हो, हमने राजेश खन्ना को जंजीर ऑफर की थी, लेकिन उन्होंने फिल्म करने से इनकार किया था। हमने उनके साथ कुछ नहीं किया, बस उनकी जगह अमिताभ को ले आए, जिन्होंने उन्हें बर्बाद कर दिया। हम तुम्हारे साथ भी यही करेंगे।इस पर ऋषि कपूर ने कहा- गो अहेड (आगे बढ़ो) और मुझे बर्बाद करके दिखाओ। किस्सा-8ः दाऊद इब्राहिम ने कॉल कर चाय पर किया इनवाइट-साल 1988 में ऋषि कपूर दोस्त बिट्टू आनंद के साथ आशा भोसले का प्रोग्राम अटेंड करने दुबई गए थे। एयरपोर्ट पर अचानक एक शख्स उनके पास आया और उन्हें मोबाइल थमाते हुए कहा, दाऊद साहब बात करेंगे। दाऊद ने कॉल पर कहा- किसी भी चीज की जरूरत हो तो बस मुझे बता देना। ये सुनकर ऋषि कपूर डर गए। कुछ समय बाद दाऊद इब्राहिम के राइट हैंड ने उनसे कहा कि दाऊद आपके साथ चाय पीना चाहते हैं। ऋषि कपूर इनकार नहीं कर सके। उसी शाम उनके होटल में एक रोल्स रॉय आई, जो उन्हें एक अनजान जगह ले गया। दाऊद ने ऋषि से मुलाकात की और कहा- मैं ड्रिंक नहीं करता इसलिए आपको चाय पर बुलाया। ये मुलाकात 4 घंटे चली। किस्सा- 9, नीतू के लिए गिफ्ट की जगह ले आए कुत्ते के बिस्कुट-ऋषि कपूर ने 13 फिल्मों में को-स्टार रहीं नीतू सिंह से 1970 में शादी की थी। इस शादी से कपल को दो बच्चे बेटा रणबीर कपूर और बेटी रिद्धिमा कपूर हुई। एक बार ऋषि कपूर अमेरिका गए, तो नीतू सिंह ने फरमाइश कर कई चीजों की लिस्ट थमा दी। कुछ दिनों बाद ऋषि कपूर 3 सूटकेस के साथ लौटे। नीतू को लगा कि सूटकेस में उनकी चीजें होंगी, लेकिन असल में उनमें पातलु कुत्ते के बिस्कुट थे। इस बात से ऋषि-नीतू का खूब झगड़ा हुआ था। किस्सा-10, मूड खराब हुआ तो डायरेक्टर को हाईवे पर कार से उतारा ऋषि कपूर हमेशा से ही गुस्से के तेज थे। फिल्म की स्क्रिप्ट सुनने से पहले ही कह देते थे पहले मेरी शर्तें सुनो, मंजूर हो, तब ही बात आगे होगी। शर्त होती थीं, सुबह 10 से पहले रात 8 के बाद शूट नहीं करूंगा। नाइट सीन हो, तब भी दिन में सेट बनाकर करो। संडे शूट नहीं करूंगा। एक दिन फिल्म सिटी में शूटिंग करते हुए एक डायरेक्टर ने कहा कि वो उन्हें स्क्रिप्ट नरेशन देना चाहते हैं। वो बिजी थे, तो डायरेक्टर ने कि पैकअप के बाद जब आप घर निकलो, तो मैं रास्ते में मेकअप वैन में ही सुना दूंगा। वो मान गए। मेकअप वैन में ऋषि कपूर हमेशा, पीछे की तरफ कमरे में न बैठकर ड्राइवर के साथ आगे बैठते थे। क्योंकि उन्हें हिलते हुए रूम पसंद नहीं आते थे। लेकिन उस दिन ड्राइवर की वजह से उन्हें पीछे रूम में बैठना पड़ा। वो पहले ही चिढ़े हुए थे, तभी डायरेक्टर ने लगातार बोलना शुरू कर दिया। फिल्म में क्या अच्छा, कैसी होगी, हीरो क्या करेगा, वगैरह-वगैरह। मेकअप वैन हाइवे पर थी। फिल्म की ज्यादातर कहानी एक रात की थी, तो ऋषि कपूर का और इंट्रेस्ट कम हो गया, क्योंकि वो रात को शूट नहीं करते थे। तभी उन्होंने पूछा, सेट कहां होगा, तो डायरेक्टर ने काफी एक्साइटमेंट में कहा, ज्यादातर शूटिंग रोड में होगी। ये सुनते ही ऋषि कपूर और चिढ़ गए। उन्होंने तुरंत ड्राइवर को आवाज दी और कहा- गाड़ी रोको, और उस डायरेक्टर को हाईवे पर ही उतार दिया और वहां से निकल गए। 50 साल का करियर और 121 फिल्में-अपने 50 सालों के फिल्मी करियर में ऋषि ने तकरीबन 121 फिल्मों में काम किया। 1973 से 2000 के बीच ऋषि ने 92 रोमांटिक फिल्मों में काम किया जिनमें से 36 फिल्में सुपरहिट साबित हुईं। इनमें 'कर्ज', 'दीवाना', 'चांदनी', 'सागर', 'अमर अकबर एंथनी', 'हम किसी से कम नहीं', 'प्रेम रोग', 'हिना' जैसी फिल्में शामिल हैं।

वायरल वीडियो के बाद राहुल रॉय की इमोशनल पोस्ट,कहा- पेमेंट करना था, ब्रेन स्ट्रोक के बाद भी काम किया,आप हमें तोड़ नहीं सकते

मुंबई। फिल्म 'आशिकी' फेम राहुल रॉय ने हाल ही में एक कंटेंट

क्रिएटर के साथ वायरल हुए वीडियो पर रिएक्ट करते हुए एक इमोशनल पोस्ट लिखी। एक्टर ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर लिखा-'मैं अपना काम ईमानदारी और विनम्रता के साथ करता हूं। मुझे कुछ लीगल मामलों के लिए पेमेंट करना है और ये आज के नहीं हैं, ये उस समय के हैं जब ब्रेन स्ट्रोक हुआ था, उससे पहले के। अगर आप मेरी सादगी का मजाक उड़ाते हैं या मेरे संघर्षों पर हंसते हैं, तो यह मेरे बारे में कम और आपके बारे में ज्यादा बताता है।' इसके आलावा लिखा -'अगर आप सच में इतने चिंतित हैं, तो मेरी मदद करें कि मुझे कोई सच्चा और अच्छा काम मिल सके, ताकि मैं इन मामलों का पेमेंट कर सकूं। कम से कम मैं मेहनत करके कमा रहा हूं, दूसरों का मजाक उड़ाकर नहीं और ब्रेन स्ट्रोक के बाद, मेरे लिए एक्टिव रहना जरूरी है। मैं जितने समय तक जीवित हूं, काम करना चाहता हूं। यह मेरे दिमाग को एक्टिव रखता है और मुझे उद्देश्य और जिम्मेदारी का एहसास कराता है कि मैं आज भी काम कर रहा हूं। हां, कभी-कभी थोड़ा दर्द हो सकता है, लेकिन आप मुझे तोड़ नहीं सकते।' राहुल रॉय का यह वीडियो डॉ. वनिता घाडगे देसाई नाम के हैंडल से शेयर किया गया था। इसमें राहुल गाने 'तेरे दर पे सनम' पर कंटेंट क्रिएटर के साथ नजर आए। यह गाना 1993 की फिल्म 'फिर तेरी कहानी याद आई' का है, जिसमें राहुल के साथ पूजा भट्ट थीं। इससे पहले भी राहुल रॉय का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें वह मुंबई के वर्सोवा इलाके में टूटी सड़क पर सूटकेस लेकर चलते दिखे थे। साधारण लुक की वजह से कई लोग उन्हें पहचान नहीं पाए थे। राहुल रॉय को फिल्म आशिकी से पहचान मिली थी राहुल रॉय ने 1990 में फिल्म 'आशिकी' से डेब्यू किया था। इस फिल्म ने उन्हें रातोंरात स्टार बना दिया था। इसके बाद उन्होंने 'सपने साजन के' और 'फिर तेरी कहानी याद आई' जैसी फिल्मों में काम किया, जिनमें उनकी रोमांटिक इमेज देखने को मिली। हालांकि बाद की उनकी 'गजब तमाशा' और 'गुमराह' जैसी कई फिल्में चली नहीं और करियर धीमा पड़ गया। बिग बॉस से फिर मिली लोकप्रियता राहुल रॉय ने 2006 में टीवी शो 'बिग बॉस' का पहला सीजन जीतकर दोबारा लोकप्रियता हासिल की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म प्रोडक्शन में भी कदम रखा और फिल्म 'एलान' (2011) प्रोड्यूस की। हाल के कुछ सालों में उन्होंने 'अदा... ए वे ऑफ लाइफ', 'टू बी ऑर नॉट टू बी', और 'आगरा' जैसी इंडिपेंडेंट फिल्मों में काम किया। वो आखिरी बार 2023 में फिल्म 'आगरा' में दिखे थे।

मेरी गोद ली हुई बेटी 9 साल की हैःउसके दोस्तों ने बताया 'वह एडॉप्टेड है', तब से वह ढेर सारे सवाल पूछती है, क्या करूं?

जयपुर। समझेंगे विषय को एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड

काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं हरियाणा से हूं। हमने कुछ साल पहले एक बेटी को गोद लिया था। मैं उससे बहुत प्यार करती हूं। बेटी अब 9 साल की हो चुकी है। कुछ दिनों पहले पड़ोस के कुछ बच्चों ने मजाक-मजाक में उसे बताया कि वह एडॉप्टेड (गोद ली हुई) है, उसके असली पेरेंट्स कोई और है। इसके बाद से बच्ची ने कई बार मुझसे पूछा कि वह हमारे पास कैसे आई और उसके असली माता-पिता कौन हैं। हम अक्सर उसके सवालों को टाल देते हैं। हालांकि हम उसे सच बताना चाहते हैं, लेकिन डर है कि कहीं ये सब सुनकर वह परेशान न हो जाए। इसका सही समय और तरीका क्या है? जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। यह सवाल बहुत से एडोप्टिव पेरेंट्स के मन में आता है। सबसे पहले यह समझें कि आपने जिस बच्ची को अपनाया है, उसके प्रति आपका प्यार और जिम्मेदारी ही असली पेरेंटिंग है। इसलिए खुद को दोषी महसूस न करें। ये बात परेशान करने वाली है कि बच्ची को आपकी बजाय दोस्तों से यह बात सुनने को मिली है। ऐसे में जरूरी है कि विषय को टालने या छिपाने की बजाय शांत, सच्चे और संवेदनशील तरीके से

उससे बात करें। साइकोलॉजी के मुताबिक, एडॉप्टेड चाइल्ड को उसके जीवन की सच्चाई बताना जरूरी है, लेकिन यह उम्र, समझ और भावनात्मक तैयारी के अनुसार होना चाहिए। सच बताने का उद्देश्य बच्चे को झटका देना नहीं, बल्कि उसके भीतर विश्वास और सुरक्षा की भावना बनाए रखना होना चाहिए। गोद लिए बच्चे को सच बताना क्यों जरूरी? ज्यादातर पेरेंट्स सोचते हैं कि एडॉप्टेड चाइल्ड को सच नहीं बताने से वह इमोशनली ज्यादा सेफ महसूस करेगा। बतौर साइकोलॉजिस्ट मेरा मानना है कि सच छिपाने की बजाय धीरे-धीरे और सही तरीके से बच्चे को इस बारे में बताना बेहतर है। अगर बच्चे को यह बात किसी दूसरे से पता चलती है तो उसे शॉक लग सकता है कि माता-पिता ने उससे ये सच छिपाया। इससे उसके मन में भ्रम या अविश्वास भी पैदा हो सकता है। इसलिए बेहतर यही है कि पेरेंट्स ही बच्चे को उसकी कहानी प्यार और अपनत्व के साथ समझाएं। बच्चे को सच से रूबरू कराना कई कारणों से जरूरी है। साइकोलॉजी के अनुसार, बच्चे को उसके एडॉप्शन के बारे में बताने के लिए कोई 'परफेक्ट उम्र' तय नहीं है। 7 से 10 साल की उम्र में बच्चे धीरे-धीरे रिश्तों और परिवार को समझने लगते हैं। आपकी बेटी 9 साल की है और उसने खुद यह सवाल पूछा है। इसका मतलब है कि वह इस विषय में जानने के लिए तैयार है। इस स्थिति में सच छिपाने की कोशिश करना या विषय बदल देना उसके मन में और ज्यादा सवाल पैदा कर सकता है। गोद लिए बच्चे को सच कैसे बताएं? गोद लिए बच्चे को सच बताना एक संवेदनशील प्रक्रिया है। इसमें शब्दों का चुनाव और तरीका दोनों बहुत मायने रखते हैं। इसके लिए सरल और उम्र के अनुसार शब्दों का इस्तेमाल करें। अगर बात आसान होगी, तो बच्चा उसे बिना डर या भ्रम के स्वीकार कर पाएगा। आप उसे इस तरह समझा सकते हैं कि 'हर परिवार बनने का तरीका अलग होता है। कुछ बच्चों का जन्म उनके माता-पिता के घर होता है, जबकि कुछ बच्चों को उनके माता-पिता दिल से चुनकर अपने परिवार में लाते हैं।' इसके अलावा कुछ और बातों का खास ख्याल रखें। जब बच्चे को पता चलता है कि उसे गोद लिया गया है, तो वे भावनात्मक रूप से आहत हो सकते हैं। वे कुछ दिनों तक नाराज रह सकते हैं, बातें करना कम सकते हैं या अपने कमरे में अकेले रहने लगते हैं। कई बार बच्चे के मन में यह भावना भी आ सकती है कि- 'क्या मुझे बचपन में छोड़ दिया गया था?''क्या मेरे असली माता-पिता ने मुझे स्वीकार नहीं किया?' ऐसी स्थिति में बच्चे के मन में रिजेक्शन (अस्वीकार किए जाने) की भावना पैदा हो सकती है। इसलिए पेरेंट्स को पहले से मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए कि शुरुआत में बच्चे की प्रतिक्रिया थोड़ी कठिन हो सकती है। इस समय बच्चे की भावनाओं को समझना और धैर्य बनाए रखना जरूरी है। बच्चे को समय दें और बार-बार भरोसा दिलाएं कि वह उनके जीवन में बेहद महत्वपूर्ण है। यही भरोसा धीरे-धीरे उसके मन की उलझन और असुरक्षा को कम करने में मदद करता है। एडॉप्टेड चाइल्ड को कैसे सेफ महसूस कराएं? इस समय बच्चे को इमोशनल सपोर्ट की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। उसे महसूस कराएं कि वह आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। बच्चे को यह समझाएं कि परिवार केवल जन्म से नहीं, बल्कि प्यार, केयर और सपोर्ट से बनता है। बच्चे की डेली रूटीन मेन्टेन बनाए रखें, ताकि स्कूल, खेल, दोस्तों और परिवार के साथ उसका जुड़ाव पहले की तरह बना रहे। उसे इमोशनल सपोर्ट देने के लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें- पेरेंट्स किन गलतियों से बचें? बातचीत के दौरान पेरेंट्स अक्सर बच्चे के सवालों को टाल देते हैं, लेकिन इससे उसकी भावनाएं दब जाती हैं। इसलिए पेरेंट्स को कुछ बातों से बचना चाहिए- सच छिपाने या बात टालने की कोशिश न करें। बच्चे के सवालों को नजरअंदाज न करें। बहुत ज्यादा डर या तनाव न व्यक्त करें। बच्चे की तुलना किसी दूसरे से न करें। एडॉप्शन को 'फेवर' की तरह पेश न करें। जबरदस्ती जल्दी एडजस्ट होने की उम्मीद न रखें। भावनाओं को गलत या 'ओवररिएक्शन' न कहें। अंत में यही कहूंगी कि एडॉप्टेड बच्चे को प्यार, सुरक्षा और भरोसा देना जरूरी है। आपकी बेटी ने सवाल पूछा इसका मतलब है कि वह आप पर भरोसा करती है। यही भरोसा बनाए रखना महत्वपूर्ण है। याद रखें, सच्चाई और भरोसे के साथ बनाया गया रिश्ता मजबूत होता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।